राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 83 15 मार्च 2004

सदस्यता शुल्क : ——————— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना 45
3. आगामी मास के सत्संग 45
3. जीवों की बीमारी क्यों होती है? (महर्षि शिवव्रतलाल जी) 46
4. अनमोल वचन 47
5. ज्ञान-सार 47
6. स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग) 48

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 92

दिनांक 6.9.92

समय ..... प्रातः

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!

राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! कबीर साहब पूर्ण पुरुष थे। किन के लिए पूर्ण थे? वे उन्हीं के लिए पूर्ण थे जिनका उन पर विश्वास था। वे श्रद्धा वालों के लिए ही पूर्ण थे। उनके लिए पूर्ण थे जिनको उस मंजिल का पूरा पता दिया या भेद बताया। काफी लोग तो कबीर को कुछ और ही समझते हैं।

मैं कहीं गया हुआ था। वहां एक सत्संगी आया और उसने कहा—महाराज! आप कबीर की बातें बताते हो। कबीर ने तो पालियों (चरवाहों) के गीत गाए हैं और उनके गीत भी पालियों जैसे हैं। मैंने कहा—बिल्कुल। आप भी तो एक आध गाओ। कहने वाले कुछ भी कह सकते हैं। कबीर साहब परम संत थे। वे रूहानी दौलत का खजाना लाए थे। इसी कारण कहते हैं कि कबीर साहब चारों युगों में थे और अब भी हैं। पर कोई पूछने लग जाए कि क्या आपके पास सतयुग का भी कोई प्रमाण है। हम उन्हें किताबें दिखाते हैं। वे किताबें 50–100 वर्ष पहले की ही छपी हुई होंगी या 200–400 साल पहले की। सतयुग की तो कोई भी पुस्तक नहीं है। अगर कोई कहे कि वे त्रेता में भी थे। तो त्रेता का भी कोई प्रमाण नहीं मिलता है। हम अपनी बातें अब जो पुस्तकें हैं उनमें लिख देते हैं। मैं निष्पक्ष आदमी हूं। पक्ष के साथ बातें नहीं करता। फिर अगर हम द्वापर की बातें कहें तो द्वापर की कोई पुस्तक नहीं मिलती। किताबें तो कलयुग की ही मिलती हैं। वे भी

500–600 वर्ष पहले की। उससे पहले की न कोई पुस्तक है और न कोई नाम है। उन पुस्तकों में जो अब कलयुग में छपती है, उनमें नाम है कि कबीर साहब चारों युगों में थे। सतयुग में कबीर साहब का नाम सत सुकत था। त्रेता में कबीर साहब मुरिन्द्र थे। द्वापर में करूणामय थे। कलयुग में कबीर साहब थे ही। उन युगों की बातों के बारे में अगर कोई कहे तो आप हौड़ लगाइए कि क्या सतयुग का कोई भी प्रमाण है। उसे कितने युग हो चुके? सतयुग 17 लाख कुछ हजार वर्ष का था, इतनी पुरानी तो कोई भी बात नहीं होगी। त्रेता युग 12 लाख कुछ हजार वर्ष का था। द्वापर युग 8 लाख कुछ हजार वर्ष का बताते हैं और कलयुग 4 लाख और कुछ हजार वर्ष का बताते हैं। पर कलयुग की बातें भी हम 400–500 वर्ष की ही बताते हैं। मैंने बातें गलत तो नहीं कही? किसी के पास 600–700 वर्ष से पहले का क्या कोई प्रमाण है? द्वापर या त्रेता का कोई प्रमाण हो तो बताओ? केवल पुस्तकों में लिखा है। यही दादू जी के बारे में लिख दिया। मैं भी लिखवा सकता हूं कि मेरे सतगुरु अरमान साहब भी चारों युगों में थे। पर ये बातें बनावटी हो जाती हैं। कबीर साहब चारों युगों में थे। इन कबीर पंथियों ने कुछ का कुछ बना दिया। कबीर साहब तो अब भी हैं, चारों युगों में थे और वे उनसे पहले भी थे। उनका शब्द क्या कहता है—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग–जाग नर क्या सूता।

वह गुरु कौन है? यदि तुम उस गुरु को समझ गए तो कबीर को भी समझ गए। अगर गुरु को नहीं समझे, तो कबीर को भी नहीं समझे। उन्होंने मुझसे कहा कि हम नहीं मानते। मैंने कहा—मत मानो। मैंने कोई ठेका तो नहीं लिया है। तुम अपने मां–बाप को भी नहीं मानते हो। वे कहने लगे कि हम मां–बाप को क्यों नहीं मानते हैं? मैंने कहा—आप मां–बाप को ठुकराते हो। जो अपने मां–बाप को ठुकरा देता है वह मां–बाप को कहां मानता है? इसी तरह तुम कबीर को भी ठुकराना चाहते हो तो उन्हें कभी

भी ठुकराया नहीं जा सकता। कबीर साहब चारों युगों में थे। अगर कोई समझने वाला हो तो बताता हूं। वह कबीर कौन है? कबीर शब्द है। कबीर साहब ने कितना सुन्दर वर्णन किया है—

न सतगुरु जननी जना, ना वा कै माई बाप।
पिंड, अंड में आवै नहीं, ना वा कै तीनों ताप।।

फिर कहते हैं—

अन्न आहार करता नहीं, सांसा नहीं शरीर।
पानी से पैदा नहीं, ता का नाम कबीर।।

कबीर साहब कहते हैं। वे चारों युगों में ही नहीं। चारों युगों से पहले भी थे। प्रलय, महा प्रलय, के बाद भी कबीर साहब रहेंगे। यह पुस्तकों का प्रमाण नहीं है बल्कि तजुर्बे का प्रमाण है। यह करणी का प्रमाण है। इससे आगे क्या प्रमाण लोगे कि उसको न माता जन्म देती है और न वह पानी से ही पैदा होता है। न वह अन्न खाता है। फिर वह कबीर कौन है? कबीर शब्द है।

शब्द ही धरती शब्द ही आकाश। शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली सष्टि शब्द के पाछे। नानक शब्द घटे घट आछे।।

यह सारा ही खेल शब्द का है और शब्द ही सारी दुनिया की जान है। उस शब्द को ही हम राधास्वामी कहते हैं। वही शब्द कबीर है। सष्टि से पहले भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा।

एक प्रेमी पूछता है—क्या आप भी कबीर हो? हां! पर मैं पूछता हूं कि आप कबीर कब बनोगे? उस वक्त बनोगे, जब तुम उस कबीर की तलाश कर लोगे। कौन से कबीर की? जो सारी दुनिया का कर्ता है। उसकी तलाश करने से तुम खुद भी कबीर ही बन जाओगे। जैसे सांभर के खेत में कोई भी चीज पड़ जाती है तो वह सांभर ही बन जाती है। सांभर का खेत का मतलब है नमक के खेत में। वहां जो मिट्टी पड़ती है या तिनका पड़ता है जो भी वहां पड़ता है उसका ही नमक बन जाता है। सो उस शब्द की कमाई करने वाला भी शब्द स्वरूप बन जाता है।

हिलमिल खेलूं शब्द में, अन्तर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पंडित क्या शेख।।

शब्द का एक ही मार्ग है दो नहीं। दो मार्ग किसने बनाए?

एक कहूं तो है नहीं, दो कहूं तो गार।

अब बताओ—एक कहूं तो वह है नहीं और दो कहूं तो गार है। झगड़े में ही पड़ जाते हैं। कोई एक कहता है, कोई दो और कोई तीन कहता है। काफी लोग कहते हैं कि हम तो तीन को मानते हैं। जीव, ईश्वर, प्रकति। हम कहते हैं—नहीं वह तो एक ही है और उस एक ही में हमें समाना है। पर जो बात चली थी वह मैं आपके आगे बताता हूं कि लोग कह देते हैं कि हम कबीर के हैं। कबीर का बेटा तो मैं हूं। **कबीर के बेटे तो वे लोग हैं जो अपने सतगुरु के पास जाने के बाद शराब नहीं पीते, मांस नहीं खाते, दूसरों की निंदा नहीं करते, पराई स्त्रियों को मां—बहन ही समझते हैं और बुरे कर्मों से बचे रहते हैं। वही दादू, पलटू, रैदास के बेटे हैं। वे ही स्वामी जी की औलाद है। वही आर्य धर्म को समझते हैं।** जो उनसे न्यारे कर्म करते हैं वे आर्य धर्म को छोड़ गए और संतमत को भी भूल गए। कोई भी मत हो चाहे सनातन या संतमत हो चाहे आर्य धर्म हो, जो इन चीजों को मानता है वही आर्य, सनातनी और संतमत का है। जो शराबों—कबाबों और बुरे कर्मों में फंसा बैठा हैं वह तो नास्तिक है। राक्षस है। दो ही श्रेणियां हैं। एक राक्षस और दूसरा देवता। देवताओं की संप्रदाय उन्हें कहते हैं जो इन भैड़े कर्मों से बच जाता है। एक भाई कबीर के बड़े भारी शब्द गाता है। पर शराब भी बहुत पीता है। क्या उसे कबीर पंथी कहा जाएगा? मैं तो कहता हूं वह सत्यानाश पंथी है। उसका नाम भी क्या लूं? किस—किस का नाम लूं? हम दूसरों की निंदा और बुराइयों में फंस कर बुरे बन जाते हैं।

कबीर साहब चारों युगों के थे। समय के अनुसार नाम तो हम कुछ भी रख लेते हैं। पर मैंने जो कबीर बताया है उसको आप

समझ गए होगे। वह कबीर शब्द है। वह चार दाग में नहीं आता है। न वह छुरी और गंडासी से कटता है।

एक प्रेमी की बातें बताता हूं। अगर कोई कबीर का रूप बना कर जलूस निकलवाना शुरू कर दे तो क्या उसे कबीर कहोगे? वह तो पांच इंद्रियों का कीड़ा है। उसको कबीर कहने वाला भी गिर जाएगा। उसके साथी भी काल के मुंह में चले जाएंगे। कबीर काल से बचाने के लिए कबीर आता है सांग भरने के लिए नहीं। काल से बचाने के लिए ही राधास्वामी दयाल, दादू, पलटू आते हैं। वे सांग भरने के लिए नहीं आते। मेरा सत्संग कठोर जरूर है पर मेरा टीका ऐसा है जिसको लग जाएगा फिर उसको कभी भी बुखार नहीं आएगा। कौन सा बुखार नहीं आएगा? वह त्रिगुण ताप नहीं आयेगा। कहते हैं तन का ताप, मन का ताप और सुरत का ताप इनसे वह बच जाएगा। सनातनी इन्हीं को आधि, व्याधि अथवा आधि दैविक, आधि भौतिक और आध्यात्मिक ऐसा कुछ कहते हैं। मैं तो सीधा कहता हूं कि वह तीनों तापों से बच जाएगा। अगर वह कबीर को समझ गया तो फिर स्वांग करके नहीं चलेगा। अगर मैं स्वामी जी महाराज का सांग करके चलूं, तो क्या आपको धोखा नहीं देता? एक रंडी सीता का स्वांग भरती है फिर वह रंडीपना करती है तो क्या वह धोखा नहीं देती है? अपने आप को सोचो, मैं क्या कहता हूं? अगर मैं कबीर का स्वांग भर कर अपने शिष्यों को रिझाना चाहता हूं और कबीर बनना चाहता हूं तो क्या अपने शिष्यों को धोखा नहीं देता हूं? कबीर से तो खून की धार नहीं आई थी। उनसे तो दूध की धार आई थी। सिकन्दर बादशाह उसका सिर काटने के लिए चला तो तलवार उसकी गर्दन से पार हो गई। कबीर साहब ने कहा—मेरा सिर तलवार से नहीं कटेगा। मेरा सिर तो एक तिनके से ही कट जाएगा। वह उसके पार हो जाएगा। सो शब्द को कौन काट सकता है? कोई नहीं।

प्रेमियो! अगर मैं कबीर का रूप धारण करके जाता हूं और

कुत्ते की मौत मरता हूं या कुत्ते की तरह कुछ न कुछ विघ्न कर बैठता हूं तो आप बताओ, कबीर कहने से आपके ऊपर क्या भार नहीं चढ़ जाएगा? सोचो ! बातें बड़ी लंबी—चौड़ी हैं। मैं बेधड़क होकर कहता हूं। वे इस तरह धोखा देते हैं। स्वांग किसी का भी मत भरो। स्वांग करना है तो उस सतगुरु के खोजने के लिए करो। वह सतगुरु और कबीर आपके अंदर बैठे हुए हैं। वह शब्द है। उस शब्द की तलाश करो। उसकी तलाश करके अपने घर पहुंच जाओगे। शब्द की तलाश कब होगी? तीन चीजों को नहीं समझोगे तो तलाश नहीं कर सकते हो। पहला—सुमरन, दूसरा—ध्यान और फिर भजन। यही तो कहते हैं—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग जाग नर क्या सूता।

गुरु वह शब्द ही है। वह शब्द न जन्म में आता है और न मरने में आता है। न अन्न आहार करता है और न पानी पीता है। वह शब्द तो शब्द ही है। सारा पसारा ही उस शब्द का है। उसी को कबीर कहा जाता है। वह कबीर आप के अन्दर बैठा है। धुनकारें दे रहा है। तुम उसको भूले बैठे हो। वह राधास्वामी दयाल तुम्हारे अंदर बैठा हुआ है। तुम तो राधास्वामी दयाल को देह समझते हो। उसे आदमी समझते हो। तुम कबीर को आदमी समझते हो। जब तक तुम उसे आदमी ही समझोगे तब तक तिर नहीं सकोगे। फिर आप प्रश्न कर सकते हो कि महाराज जी, अगर हम आदमी नहीं समझेंगे तो फिर हम ध्यान किस का करेंगे? ये बातें कल मैंने पिछले सत्संग में कह दीं थी कि वह मालिक तो सर्वव्यापक है। जर्रे—जर्रे में है। सर्वदेशी है। उसको एक देशी बनाना पड़ता है। तो उस शब्द को एक देशी कैसे बनाओगे? यह तो सतगुरु जब दीक्षा देता है तब समझा देता है और वह एक देशी हो जाता है। मैंने आपको एक शब्द बड़ा अच्छी तरह बताया था कि कबीर साहब ने पांच नाम (पांच धुनी) बताए और जिस मंजिल का जो भी मिला वैसी ही शिक्षा देकर बताए और वे आगे चले

गए। अब कोई पहले में अटका है और कोई पिछले में अटक गया है। कोई उस से अगले में अटक गया। कोई सोहम् में अटक गया। जो सोहम् से आगे नहीं गया वह कभी भीकाल माया से बच नहीं सका। देहस्वरूप में आकर ही कबीर साहब ने समझाया था। देहस्वरूप में आकर ही सतगुरु समझा सकता है। पर वही सतगुरु समझा सकता है जिसने अंतर का मार्ग तय कर रखा हो। अंदर का मार्ग तय कब करोगे? जब तुम अपना जीवन पवित्र रखोगे। स्वांग मत भरो। सो कबीर साहब के विषय में किसी को भी शंका नहीं उठानी चाहिए। कबीर साहब सष्टि से पहले भी थे। अब भी हैं और आगे भी रहेंगे। कबीर साहब न गर्भ में आए हैं और न आ सकते हैं। एक भाई ढाकला गांव में आर्य समाजी था। उसने प्रश्न किया—क्या कबीर साहब फूल में पैदा हुए थे? मैंने कहा—हां। सोचो ! सत्संगियो मैं तुम्हारा संशय दूर करता हूं। मैं कबीर का बेटा हूं। तुम्हारे सभी के अंदर कबीर है। पर तुम उस बात को भूले बैठे हो। तुम कबीर को तो समझ गए हो। तुमको बता दिया गया है कि वह शब्द सारे ही जर्रे—जर्रे में है और वह शब्द ही कबीर है। उस भाई ने कहा—हम तो नहीं मानते कि कबीर साहब फूल में पैदा हुआ था। मैंने कहा—फूल के बिना तो इंसान पैदा ही नहीं होता।

प्रेमियो! सोचो, मैं कबीर साहब की बातों को सिद्ध करता हूं। कबीर पंथी तो आज हैं ही नहीं, पंथी तो केवल वही हैं जो उस रास्ते पर चल पड़े और जो रास्ते की अठारह मंजिलों का वाकिफकार हो। वही असली रास्ते को बता सकता है। जो सोहम् के देश से आगे जा चुका हो। उस देश में धुनी होती है। वे मंजिल बता नहीं सकते। मैंने कहा—यह बिल्कुल ठीक है, कबीर साहब फूल से ही पैदा हुए थे। इसमें कोई झूठ नहीं है। उसने कहा—हम किस तरह माने? मैंने कहा—आप सब यह तो मानोगे कि आप सभी फूल से ही पैदा हुवे हो। सभी जितने संसार में हैं फूल से ही पैदा हुए हैं। आज जब उस फूल को मोड़ देते हैं तो बच्चा पैदा नहीं होता है।

बगैर फूल के क्या कोई पैदा हुआ है? सोचो! मेरी बात को। सत्संग सत्संग ही होता है। बातों का नहीं, सत्संग तसल्ली का होता है। करणी का होता है। सत्संग एक निर्णय कर देता है। सो सभी फूल से पैदा होते हैं। फूल को उलटा मोड़ा जाता है या फूल को ताकत नहीं मिलती है और फूल मुरझा जाता है, फिर कुछ भी पैदा नहीं होता। सो कबीर साहब फूल से नहीं पैदा हुए बल्कि वे तो फूल ही थे। फूल भी नहीं, बल्कि वे तो खुशबू मात्र थे। खुशबू हर जगह फैली रहती है। उस खुशबू को एकाग्र करना तुम्हारा काम है। जब पूर्ण सतगुरु मिल जाता है वह उस खुशबू को एकाग्र कर लेता है। वह शब्द एकाग्र कब होगा? जब तुम्हारी मन की वति एकाग्र होगी, तो शब्द भी एकाग्र हो जाएगा। उस शब्द का सहारा लेकर हम उस ठिकाने पर पहुंच जाएंगे। सो मैंने आपको बताया—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग—जाग नर क्या सूता।

वह गुरु का भजन कौन सा है? गुरु का भजन शब्द की कमाई करना है—

शब्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाय।
द्वार न पावै शब्द का फिर—फिर भटका खाय।।

अब स्वामी जी महाराज की वाणी से सिद्ध करके बताता हूं। सुरत अपना काम करती है और निरत अपना काम करती है। सुरत का काम सुनना है और निरत का काम देखना है। तुम्हारे अंदर जो जीवात्मा है, इस का नाम सुरत है। इसको सुरत, चेतन शक्ति या धार कहते हैं। इसे जीवात्मा भी कहते हैं। यह शब्द के बिना अंधी होती है। इस जीवात्मा को शब्द का पता नहीं लगा तो यह अंधी है और फिर—फिर नर्कों में जाएगी, कभी स्वांगो में जाएगी। इस तरह यह भटके खाती रहेगी और नीचे ही चक्कर काटती रह जाएगी। कभी भी अपने घर नहीं पहुंच सकती है। यह गिरती रहेगी। जब इसको शब्द मिल जाएगा तो यह अपने घर चली जाएगी। सो शब्द का सहारा लेना पड़ता है। यह शब्द को पकड़

कर अपने घर चली जाती है। यह सहारा उन धुनियों का (शब्द का) ही सहारा है। कौन सी धुनी का सहारा है? यह उसी धुनी का सहारा है जिसके लिए पहले महात्मा यह कहा करते थे कि मुश्किल है तुरिया पद का पावना। इस तुरिया पद से तो हमारी अलिफ—बे—पे (स्वर—व्यंजन) शुरू होते हैं। यहां उस तुरिया पर से तो हमारी शिक्षा या पढ़ाई शुरू होती है। उस छठे चक्कर से कहो या पांचवी धुनी से हम शुरू करते हैं। काफी लोग इसे पांच नाम कहते हैं। यह कोई बुरी बात नहीं है। यह पांच नाम का जाप करना तो वर्णात्मक जाप है, यह धुनात्मक नाम नहीं है। सोचो! मैं क्या कहता हूं? पांच नाम जाप है बल्कि जाप नहीं अजाप है। सुमरन है। सो जो ये पांच नाम हैं ये तो, मंजिलें—मंजिलें करके पांच मंजिलों पर पहुंचना है। ये पांच धुनी हैं। तुलसी साहब जी अपनी वाणी में खुल्लम—खुल्ला कहते हैं कि पांच नाम से उद्धार नहीं होगा। कबीर साहब ने भी एक जगह दोहा कहा है कि इनसे उद्धार नहीं होगा। मैं भी कहता हूं कि पांच धुनियों से उद्धार नहीं होगा। चार धुनी काल की हैं। पांचवी में पहुंचोगे तब उद्धार होगा, यह भेद गुप्त ही रह गया है।

कोई यह मत कहना मैं किसी का खंडन करता हूं। मैं तो अपनी बातें ही आप को बता रहा हूं। सो मंजिलें—मंजिलें पहुंचना यही है कि जब इन धुनियों का पता नहीं होगा तब भी नहीं पहुंचोगे। सो संतमत इन धुनियों का पता देता है। उनको पांच नाम कह देते हैं। जो लिखने में आता है और जो जुबान से बोला जाता है वह वर्णात्मक कहलाता है। फिर उसे तो सुरत के कानों से सुना जाता है। सुरत की जुबान से जाप होता है। सुरत की आंखों से उस प्रकाश को देखा जाता है। इसको कहते हैं—आंख, कान, मुख को बंद लगा के सुनो। फिर भी कहते हैं—

सुमरन में सुरत लगाय के, मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देय के, अंतर के पट खोल।।

कबीर साहब ने बड़ा सुन्दर लिखा है—

अंतर के पट खोल, तोहे राम मिलेंगे।
कटू वचन मत बोल, तोहे राम मिलेंगे।।

यह कौन कहता है? ऐसा अंतर की धुनी कहती है। सो प्रेमियो, सत्संगियो! इन पांचों धुनियों का जानना भी जरूरी है। इन पांचों धुनियों को नहीं जानोगे, तो अपने घर नहीं पहुंचोगे। इसलिए कबीर साहब जी कहते हैं सतगुरु के बगैर उद्धार नहीं होगा। सतगुरु कौन है? वह तुम्हारे सभी के अन्दर बैठा हुआ है।

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा,
जाग— जाग, नर क्या सूता।

जागना कौन सा है?—

जागन से सोना भला, जो कोई जाने सो।
अंतर डोर लागी रहे, बाल न बांका हो।।

यह कबीर साहब का दोहा है। एक जगह ये भी कहते हैं—

सोऊं—सोऊं क्या कहे, सोए आवै नींद।
काल सिरहाने यूं खड़ा, ज्यों तोरण ऊपर बींद।।

क्या इन्हीं बातों का ही चक्कर काटते रहोगे? वे ठीक कहते हैं—

जागण से सोना भला जो कोई जाने सो।
अंतर डोर लागी रहे, बाल न बांका हो।।

पिछली लाइन को पकड़ लो। फिर बेड़ा पार हो गया समझो। संसार की तरफ से सोना है और शब्द की तरफ से जागना है। जब हम शब्द की तरफ से जाग जाएंगे, सीधे शब्दों में मालिक की तरफ से अगर जाग गए और संसार की तरफ से सो जाते हैं। यदि संसार से हमारा मोह दूर हो जाता है तो कितना कुछ भी हो हम उस संसार को भूल जाते हैं। उस शब्द के साथ लग जाते हैं। सो जिंदा राम कहो। जिन्दा जागता गुरु कहो। उसे कुल मालिक, राधास्वामी दयाल कहो। उस के साथ हम लग जाते हैं। फिर हम

कभी भी छूटते नहीं है। इतना प्यार बढ़ जाता है। यह ऐसा नशा है कि इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है। ऐसा नशा किस चीज का कहूं—

बाबर नशा शराब का उतर जाए प्रभात।
नाम ख्वारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।

वह नाम की ख्वारी कभी उतरती नहीं है। रात और दिन चढ़ी रहती है। पर मैं आपको बातें कह रहा था कबीर साहब की—

गुरु के जाग—जाग नर क्या सूता।
जागत नगरी में चोर नहीं लागे झख मारेंगे यमदूता।

तुम जागते रहो। यह ज्यादा नींद खाने पीने का ही तो नशा है। मैं एक मिशाल देता हूं। चोरों को चोरी का नशा होता है, वे कभी भी सोते नहीं हैं। जारों को जारी का नशा होता है, वे भी कभी भी नहीं सोते हैं। सो यह भी तो अपने ही यार से मिलने का एक नशा है। सत्संगियो! वह हमारा यार कौन है? वह हमारा यार कबीर है, वह हमारा यार दादू जी महाराज, स्वामी जी महाराज, नानक साहब है। हमारे उनके साथ मिलते ही कोटि जन्मों के पाप कट जाएंगे। सभी अपने लालचों के कारण अपने यारों से मिलने की कोशिश करते रहते हैं। चाहे किसी की भी मिसाल ले लो। जो अपने यार से मिलना चाहता है उसको कभी भी नींद नहीं आती है।

यह संसारियों की एक मिसाल ली है। आदमियों के लिए, लड़कियों के लिये और भी कोई न कोई होंगे जो अपने यार से मिलने की खातिर सारी रात भर तड़पते रहते हैं। सोते ही नहीं है। सो हम सत्संगियों को भी ख्याल करना चाहिए। हमारा यार कौन है? वह राधास्वामी दयाल, वह कबीर साहब। सीधे शब्दों में वह परमात्मा या वह शब्द है। वह हमारा युगों—युगों का यार है। उसी में से हमारी धार आई है। उसी में से हम बिछड़े हैं और उसी में वापिस मिलना है। तुम अपने यार को भूल गए हो। इसलिए नर्कों

के झूले में झूलना पड़ता है। नर्कों का मुंह देखना पड़ता है। अगर तुम उस कबीर को याद कर लोगे, तो फिर युगों—युगों तक संसार में दुख नहीं पाओगे। जिन्दा हो जाओगे। तुम उसको याद करो। सोता तो वही है जो उस शब्द को भूल जाता है। जो अपने यार को भूल जाता है वह जुल्मी माना जाता है। सो मैंने सीधे शब्दों में आपको बता दिया है। उस कबीर को याद करो। उस कुल मालिक को याद करो। यदि तुम शब्दों से ही याद करते रहोगे तब तक वर्णात्मक जाप है। दीक्षा के समय जो आसन बताया गया है संत उस आसन पर बैठ कर तजुर्बा करना बताते हैं। काफी तो आज ऐसे महात्मा हो गए हैं जो कह देते हैं कि तेरा भजन मैं कर दूंगा। मैं कहता हूं—तुम इसके नाम की रोटी भी तो खा लिया करो। देखो फिर तुम त्राहि—त्राहि नहीं करो तो। मैं अगर तुमको कहूं कि मैं ही खा लूंगा तो फिर क्या तुम भूख से तड़फोगे नहीं? सो भजन तो अपना ही करना पड़ता है।

अपना किया भुगत रे जिया। सतगुरु पूरा ढूंढन न किया।

अपना ही करना पड़ता है और अपना ही भरना पड़ता है। हां। संत सतगुरु करते हैं। जिससे काम लेना होता है उनका काम कर भी देते हैं। वे करवा लेते हैं। सो इसी तरह मंजिल—मंजिल पहुंचने की बातें आती हैं। तो मैंने आपको बताया कि—संत सतगुरु के भजन के बिना उद्धार नहीं हो सकता है। हमारे एक महात्मा पं० द्वारकादास थे। बड़े सच्चे साधु थे। हजूर महाराज शिवव्रतलाल जी से नाम लिया था। उन्होंने कहा—बेटा ! क्या तुम कबीर को समझ गए? मैंने कहा—मैं समझ गया हूं महाराज! उन्होंने कहा—वाह! अगर तू समझ गया तो मेरे दिल में शांति आ गई। सो कबीर चारों युगों में थे। चारों युगों में कौन था? वह शब्द था। उस शब्द में ही हमने समाना है। उसी में से हम आए थे और उसी में वापिस जाना है। मैं उनकी बातें कहता हूं जिन्हें अपने घर (मोक्ष में) जाना है।

मैं स्वर्ग वैकुण्ठों में जाने वालों से बात नहीं करता हूं। पर आप प्रश्न कर सकते हो कि क्या आप स्वर्ग वैकुण्ठों को छोटे समझते हो? हम तो बड़े समझते हैं। हमे तसल्ली कैसे होगी?

प्रेमियो !

जा को दर्शन इत है, वा को दर्शन उत।
जा को दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत।।

जिसको यहां शांति नहीं है, तो समझ लो कि कुछ भी नहीं है। खाली बैठा है। उसको तो कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। जिसको शांति मिल गई है उसे सब कुछ मिल जाता है। पर शांति क्या है और किस में आती है? शांति तो तभी आती है जब हम गुरु को भजते हैं। गुरु से प्यार करते हैं। शब्द के बिना शांति किसी भी चीज में नहीं है। महाराज बाबा सावण सिंह जी का यह लेख है। जब तक सतगुरु सिर पर हाथ नहीं रखता उसके कर्म नहीं कटते। यही इतिहास कबीर साहब का भी मिलता है। कबीर साहब के सिर पर रामानन्द ने हाथ रखा था। तब कबीर साहब ने कहा था—**गुरु धरा शीष पर हाथ मेरे सारे कर्म कटगे री।**

यही हजूर महाराज जी की वाणी आती है—

गुरु धरा शीष पर हाथ मन क्यों सोच करै।
गुरु से काल भी डरे, गुरु तेरी छिन—छिन रक्षा करै।

अरे! शब्द तुम्हारे ऊपर से हाथ कभी भी हटाता नहीं है। तुम खुद ही हट जाते हो। आप कहोगे कि किस तरह हट जाते हैं मिसाल दो? तुम देखते हो कि गाड़ी भागती है, दरखत (पेड़) नहीं भागते हैं। जब तुम बैठते हो तो तुम्हारा मन डांवाडोल हो जाता है, पर वह शब्द कभी भी डांवा डोल नहीं होता है। उसकी तो धुनकारें उठती रहती हैं। वह हर वक्त हाथ रखता है, पर तुम उस शब्द को भूल जाते हो। जब शब्द को भूल जाते हो तो धोखे में बैठे हो।

इसीलिए गुरु के भजन बिना निस्तारा नहीं होता है। सो प्रेमियो, सत्संगियो! जागना तो वही है कि तुम अपनी वत्ति को मोड़

कर जैसे कछुवा अपने अंगों को सिकोड़ लेता है और उन्हें अपने अन्दर ले जाता है इसी तरह अभ्यासी भी अपनी बिखरी हुई वत्ति को अंतर में ले जाता है तो वह सतगुरु में समा जाता है और सतगुरु शब्द में समा जाता है। सो फिर वापिस आने की भी परवाह मत करो। वापिस आने की जरूरत भी नहीं है। अपने घर चले जाओ। यह कबीर साहब की वाणी है।

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग—जाग नर क्या सूता।
जागत नगरी में चोर नहीं लागैं, झख मारेंगे यमदूता।।

जागत नगरी में चोर नहीं लगते हैं। ये चोर कौन हैं? जब तलवार साण पर चढ़ जाती है तो साण सारे मैलों को धो देता है। जब पान में कोई धब्बा पड़ जाता है तो पान वाला उसे तमोली में से निकाल कर सारे ही धब्बे काट देता है। इसी तरह अगर हमारी आत्मा पर पर्दा पड़ जाता है तो शब्द सारे ही पर्दे उतार देता है। तो ये यमदूत कहां से आते हैं? ये तो तुम्हारे अंदर ही बैठे हैं। तप करने वाले भी सारे ही मारे जाते हैं। श्रंगी की भंगी बन गई पाराशर की दुर्दशा हो गई। तुम कितनों की बातें पूछोगे? जप—तप करने वालों की भी हालतें तुमने सुनी हैं। जप करने वाले तो औरों को भी धोखा देते हैं कि मैंने इतने जप कर रखे हैं मुझे इतने पैसे दे दो। मैं ये करे कराये जप तुम्हें दे दूंगा। क्या वे जप बेचने वाले खुद तिर गए हैं? जप बेचा तो नहीं जा सकता है? कोई प्रमाण दिखाओ। अगर प्रमाण भी होगा तो भी मोक्ष का प्रमाण तो नहीं मिलेगा। उरले व्यवहार का मिल जाएगा। सो मेरी बातों को समझो। जप—तप करने वाले तो यहीं रह जाते हैं।

जप कर तप कर करोड़ जतन कर, कांशी में करोंत ले लीता।

अब कांशी में करौंत लेना धोखा ही था। यही परसुराम जी ने कहा है—

नाम लिया जिन सब किया, योग यज्ञ आचार।
जप तप तीर्थ परसराम सभी नाम की लार।।

सभी जप—तप तीर्थ आदि सभी नाम के पीछे हैं। जिसने नाम ले लिया उसने ये सभी कर लिए। जमींदार लोग एक मिसाल दिया करते हैं कि अगर कोई कंकरों पर गाहटा (बैलों को गहराई) जोड़ दे तो बैलों के पांव फूट जाएंगे। अन्न का दाना उसमें से प्राप्त नहीं होगा। दाना तभी निकलेगा जब भुट्टों में दाने होंगे और उन पर गहाई की जाएगी। सो परमात्मा के नाम के बिना जप—तप आदि का तो कंकरों पर बैल घुमाने के समान है। जिसने परमात्मा का नाम ले लिया उसने तो सभी कुछ कर लिया। सो मैं इनका खण्डन नहीं करता हूं। ये भी अपने—अपने लोकों में ले जाते हैं। परन्तु राजा नग ने कितना कुछ किया, पर उसका क्या हुआ?

कर्ण ने भी सोने का दान किया था उसकी हालत क्या हुई? मैंने पहले भी एक बार सत्संग में ये बातें कही थीं। कितनों की बातें पूछोगे? सो ये सभी बातें नाम के पीछे रह जाती है। वह नाम कहां है? वह तुम्हारे अंदर ही धुनकारें दे रहा है।

नाम नाम तो सब कहैं, नाम न चीन्हा कोय।
नाम गुरु की दात है, नाम कहावे सोय।।

नाम गुरु की दात है और वह नाम तुम्हारे अंदर ही धुनकारें देता रहता है। सो यह कबीर साहब की वाणी थी और उन्हीं की बातों से आपको सिद्ध करके बताया है कि कबीर किसे कहते हैं। कबीर को चारों युगों में बताया जाता है। यह गलत है। कबीर तो चारों युगों से पहले भी था। सारी सष्टि का कर्ता धर्ता है और वह कबीर प्रलय महाप्रलय के बाद भी मौजूद रहेगा। कबीर नहीं रहेगा उस दिन संसार में कुछ भी नहीं रहेगा। इसको भी आप समझते होंगे कि—

शब्द गुप्त जब रहा अनाम। शब्द प्रगट जब धरिया नाम।।

यह स्वामी जी कहते हैं, जब तक शब्द गुप्त रहता है इसका कोई नाम ही नहीं होता है। जब वह शब्द प्रगट हो जाता है तो उसी के असंख्य नाम हो जाते हैं। इसी प्रकार जब तक गुप्त था तो गुप्त था और जब वह प्रगट हो गया तो उसके भिन्न–भिन्न नाम रख दिए गए। किसी का कुछ रख लिया और किसी का कुछ रख लिया। शब्द का क्या नाम रखोगे? तुम्हारी मर्जी है। तुम देह का नाम रख लेते हो और वैसे ही बना लेते हो। शब्द तो शब्द ही होता है। कोई इसे लोगास कहता है, कोई इसको वर्ड कहता है। कोई धुर की वाणी कहता है या कोई इसे कलमा इलाही बांग कहता है। कोई शब्द कहता है। ये तो न्यारे–न्यारे शब्द हैं। सो इन शब्दों में मत फंसो। अभ्यास करके आगे चलने की कोशिश करो। वह शब्द, वह मालिक दूर नहीं है, तुम्हारे अंदर है।

ज्यों तिल माहिं तेल है चकमक माहिं आग।
तेरा प्रीतम मुझे में जाग सके तो जाग।।

आगे क्या कहते हैं–

जप कर तप कर करोड़ जतन कर।

अब चाहे करोड़ जतन करो तुम बच नहीं सकते। कितने ही लोग यत्न करते हैं, जप करते हैं, तप करते हैं। चाहे और भी करोड़ों जतन चाहे कर लेना और चाहें कांशी में जाकर करौंत ले लेना। कांशी में करौंत लेने की तो एक प्रथा थी। महर्षि दयानन्द जी जैसों ने इसके बारे में लोगों को समझा दिया। सब धोखा ही था। जिसे संत जीवित मरना कहते हैं वह और है। करौंत से तो अकाल मौत ही मरा जाता है। पर लोग अकाल मौत नहीं समझते थे। पहले कांशी में जाकर जान बूझ कर मरते थे। पर इसे अपघात ही तो कहते हैं। यह अपघात करके ही मरना होता था। इस मरने को नहीं, संत तो यूं कहते हैं–

पहले मरना सो ही मरना, पीछे मरना विपद का भरना।

पहले मरना कौन सा है? अपनी वत्तियों को मोड़ कर उस सतगुरु में जोड़ दो। उस शब्द या कबीर में जोड़ दो। दादू, पलटू में जोड़ दो। तब तुम जीवित रह जाओगे। शांति मिल जाएगी और कहीं भी शांति नहीं है। इसीलिए कहते हैं कि कबीर से ही शांति मिलती है और से शांति नहीं मिलती है। पर कबीर का फोटो रखने से तो शांति नहीं मिलेगी। स्वामी जी का फोटो रखने से शांति नहीं मिलेगी। फिर तुम फोटो वालों की निंदा क्यों करते हो? मन्दिरों की काट करते हो। मंदिरों में ठाकुर की मूर्तियों की काट करते हो और अपने गुरु के फोटुओं की आरतियां उतारते हो। तुम कौन से पीछे रह जाते हो? बाबा सावण सिंह जी ने लिखा है कि जो मेरे फोटो की आरती उतारेगा वह नर्क में जाएगा। क्यों कही उन्होंने इतनी कठोर वाणी? उनका लेख मेरे पास है। ऐसा क्यों कहा? क्योंकि लोग फिर से पांखडों में फंस गए। स्वरूप किस लिए रखा जाता है? स्वरूप तो इसी लिए रखा जाता है कि जब हम चूक जाते हैं। कोई बात भूल जाते हैं। कोई गलती हो जाती है तो हम फोटो के सामने पश्चाताप कर लेते हैं। पर वह फोटो या स्वरूप क्या करता है? उसकी रेडीशन तुम्हारे अंदर आ जाती है और तुम्हारे विचारों में तब शान्ति आ जाती है। तसल्ली आ जाती है। यही राम और कष्ण की मूर्तियों की बातें हैं कि राम की पूजा करने से उसमें एकदम मर्यादा आ जाएगी। क्योंकि उनकी रेडीशन काम करती है। सो जिस गुरु सतगुरु का तुम ध्यान करोगे, उसकी रेडीशन तुम्हारें अंदर आ जाएगी। अगर वह चुगल है तो तुम भी चुगल हो जाओगे। अगर वह दूसरों को देखकर जलता है, तो तुम भी बुरी–बुरी बातें सोचना शुरू कर दोगे। यह नियम है। जैसे टेलीविजन में देखते हो। टेलीवीजन में इतने खेल कहां से आते हैं? टेलीविजन का एक केन्द्र है उसमें जो गाना गाते हैं वही टेलीविजन पर भी आ जाता है। यह सांइस का तजुर्बा है। सतगुरु

भी एक टेलीविजन के केन्द्र की तरह है और शिष्य का हृदय टेलीविजन है। जब तुम सतगुरु स्वरूप का ध्यान करोगे, तो जो सतगुरु के गुण हैं उनकी रेडीशन के द्वारा तुम्हारे अन्दर समा जाएंगे। इसीलिए ये कहते हैं कि अगर अंगहीन का ध्यान करोगे, तो कभी भी तुम्हारा उसके प्रति ध्यान नहीं लगेगा। अगर लग भी जाएगा तो तुम सतपुरुष का धोखा खा जाओगे, क्योंकि सतपुरुष अंगहीन तो नहीं है। वह तो पूर्ण है। इसी तरह अगर तुम कामी का ध्यान करोगे, तो तुम कामी बन जाओगे। अहंकारी का ध्यान करने से अहंकारी ही बन जाओगे। तुम असली सतगुरु कबीर का ध्यान करोगे, तो तुम कबीर बन जाओगे। कबीर बनने के बाद कोई ऐब रह ही नहीं सकता है क्योंकि उस शब्द में कोई ऐब नहीं होता है। शब्द तो निखालिश कलाकन्द और मिश्री है। इसमें मिलौनी नहीं है। पर कौन से शब्द में मिलौनी नहीं है? शब्द तो दस हैं। नौ शब्दों में मिलौनी मिल जाएगी। दसवें शब्द में मिलौनी नहीं है। इसलिए दसों प्रकार के शब्दों का निर्णय करके सतगुरु आगे ले जाता है। ये लोग तो एक शब्द की टेक में बंध जाते हैं। उन्हें न आगे का पता होता है और न पीछे का ही पता होता है। कितनी बातों में वे बंध गए हैं? कबीर के बारे में यही सोचने लग जाते हैं कि कबीर को तो जुलाहे ने ही पाला था। कबीर तो ताल के ऊपर मिला था। कबीर तो यह था, वह था। ये बातें अगर संत घटाते हैं तो बड़ी लंबी चौड़ी बन जाती हैं। जब तुम गुरुमुखों का संग करोगे तब पता चलेगा। तुम तो मनमुखों का संग करते हो। मनमुख अपनी मर्जी से नाम रखने वाला ही तो होता है। वह काल का एजेन्ट होता है। जो अपनी ही मर्जी से अपना मत चला लेता है वह काल का एजेन्ट है। जो काल के जीव हैं वे बेचारे क्या करेंगे? वे तो काल के भेजे हुवे एजेन्ट हैं और वे जीवों को धोखा देने के लिए ही आए हैं। जैसे जानवरों को पकड़ने वाला दाने डाल कर अपना

जाल बिछा देता है इसी तरह से इन नकली गुरुओं ने जाल बिछा रखा है। ये कबीर का नाम लेकर कबीर बन बैठते हैं यही इनका काम है। मैं कबीर साहब की वाणी का निर्णय करके बताता हूं यदि आप लोगों को ये बातें नहीं जंचती हैं तो मेरा क्या लोगे? ये तुम्हारे कर्म ही होंगे। मैं तो सीधा कहता हूं कि कबीर न तो कभी मरता है और न वह कभी गर्भ में आता है। न कबीर कभी संसार से जाता ही है और न कभी वह संसार के लोगों को दुखों में फंसाता है। कबीर तो कबीर ही है। उसको पहचान लिया तो तिर जाओगे।

प्रेमियो! तुम जप करो, तप करो, पूजा–पाठ, होम–यज्ञ करो। इनसे स्वर्ग वैकुण्ठ आदि मिलेंगे। कबीर नहीं मिलेगा। कबीर से मिलना है तो कबीर की तलाश करो। कैसे करोगे? तुम उस शब्द की कमाई करो। शब्द किसे कहते हैं–

शब्द–शब्द तो सब कहैं, वह तो शब्द विदेह।
जिव्हा पर आवै नहीं, तू निरख परख कर लेय।।

वह शब्द विदेह है। देह रहित है। जिव्हा पर नहीं आता है। सो यह काम इसी जिन्दगी में करना है। आगे कहते हैं–

बिना भजन तेरी मुक्ति कोन्या, मर जा योगी अवधूता।

तीन चीजें आपको बताई हैं–सुमरन, ध्यान और भजन। सुमरन नाम को कहते हैं। जो नाम जुबान से जपते हैं वह तो वर्णात्मक है। वर्णात्मक नाम का सुमरन करते–करते जब हमारा आसन लग जाता है, हम ऊपर चलते हैं तो ध्यान में लग जाते हैं। सुमरन करते समय दो चीजें गायब रहती है भजन और ध्यान। सुमरन करते–करते हम शरीर को खाली कर देते हैं हमारे शरीर में सुन्न आ जाती है। हम जुबान के सुमरन को एकदम भूल जाते हैं। उस समय हमारा ध्यान छठे चक्कर पर टिक जाता है। इस जगह टिकने पर हम ध्यान में लग जाते हैं और सुमरन भूल जाते हैं। अब जुबान के सुमरन को भूलकर उस प्रकाश को देखते हो, वहां धुनी

होती है, इसे ही पांचों नामों की पांच धुनियां बताते हैं। यह धुनी वर्णात्मक नहीं है। यह धुनात्मक है। जब तक धुनात्मक को नहीं समझोगे, तो वर्णात्मक में ही बैठे रहोगे। सो संत इन पांचों धुनियों को समझाते हैं। इनमें फंसाते नहीं है। अगर इनमें ही फंस गए तो तुम कभी भी काल से नहीं बच सकते हो। इनको तो धुनात्मक समझ कर मंजिलें मंजिलें चलते रहो। धुनी को छोड़ करके ध्यान में जाओ। ध्यान में धुनी भी होती है। ध्यान में प्रकाश प्रगट होगा। सो महात्मा लोगों और गुरु मुखों के संग करने से पता लगता है। वे अपना तजुर्बा बताते हैं। उस वक्त तुम देखोगे कि आवाज भी सुरीली आएगी और प्रकाश भी दिखाई देगा। अब आप बताओ—दो तीन चीजें मिल भी गई और गायब भी रह गई। तब भजन गायब रहेगा। जब उनको छोड़कर भजन में जाओगे तो तीनों चीजें इकट्ठी हो जाएंगी। उस जगह पर ध्यान (जो तुम प्रकाश देखते हो) सुमरन (जो अजपा जाप होता है, वह कुदरती होता रहता है) धुनी (जो ऊपर खींचने वाली धुनी होती है) तीनों एक साथ होंगे। जैसे पहले ही बताई है पांच धुनी होती हैं। पहली चार धुनियां तो छोड़ देनी हैं। सतखण्ड में पहुंचते—पहुंचते एक धुनी रह जाएगी। जब मंजिले—मंजिले पहुंचोगे, तभी उनका पता चलेगा। चार धुनी छोड़कर अंतिम धुनी में चले जाओगे। आगे कबीर साहब खड़े मिल जाते हैं। वहां अकेला नहीं जाया जाता है। वहां वह राधास्वामी दयाल मिल जाएंगे। वैसे भी राधास्वामी दयाल का सहारा लेना पड़ेगा। किस राधास्वामी दयाल का? उस शब्द का। सहारा लेने वाला कौन है? हमारी जीवात्मा हमारी सुरत सहारा लेती है। इसी तरह कबीर का सहारा कौन लेगा? सुरत या जीवात्मा ही कबीर का सहारा लेगी। वह उस धार को पकड़ कर चली जाएगी। आगे कहते हैं—

जोगी होग्या जटा बढ़ा ली अंग रमा ली भय भभूता।
दमड़ी कारण काया जला ली योग नहीं तेरा हठ झूठा।।

कहते हैं कि तू जोगी हो गया। पर यह तो मुक्ति का मार्ग नहीं हुआ। गीता में कष्ण जी भी कहते हैं कि ये मेरे घर को नहीं पा सकते हैं। यह तो दूसरा ही व्यवहार है। यह तो योग नहीं होता है। एक आदमी कहता है—अरे पगला! राम—राम कर। दूसरे ने कहा—दाम—दाम। पहले ने कहा—अरे पगला! राम—राम कर। दूसरे ने कहा कि—यह कहने का ही अंतर है। तू भी राम—राम नहीं करता है। तू अंदर से तो दाम—दाम ही करता है और यही सोचता है कि कोई पैसे दे जाए। मैं सीधा दाम—दाम कह देता हूं। मैंने कोई जुल्म तो नहीं किया है। इसी तरह से वे पैसे के लिए शरीर को फूंक लेते हैं। योग—साधन नहीं है। वह तो झूठा ही हठ है। वे जो चौराहे पर खड़े होकर ऐसा कहते रहते हैं, यह भी उरला व्यवहार है। अगर खड़े होने से ही मुक्ति होती है तो दरख्तों की हो जाती। पेड़ों में तो आदमी की अपेक्षा हजारों गुण ज्यादा हैं। अगर ऐसा नहीं हो तो आप बताओ। सो जो इंसान सुमरन नहीं करता है वह बेशक सारी उम्र खड़ा रहे। जो सुमरन नहीं करता बेशक वह सारी उम्र मौन रहे। सुमरन नहीं करता वह बेशक कपड़े त्याग दे। सुमरन नहीं करता है वह कुछ भी करता रहे वह कभी भी तिर नहीं सकता है। सो सुमरन तो सार है और वह सार कौन सा है? जब छठे चक्कर से ऊपर सुरत चली जाती है वही सुमरन सार है। नीचे का सुमरन सार नहीं है। यह सब वर्णात्मक जाप है। सो सारा जीवन गुजर जाता है। दमड़ी के खातिर अपनी देह जला लेता है। बेहद पाखंड करते हैं। मैं भी इसी बात में फंसा था। ऐसे ही रहता था और यूं भी सोचता था कि लोग तुझे देख कर कहेंगे कि बड़ा महात्मा है। अब मैं कहता हूं कि मेरे पास कोई न आए। एकांत में रहूं। यह भी कोई अवस्था होती है। यह पता नहीं है कि मेरी इस अवस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था भी आ जाए। पर मैं अपनी बातें बता देता हूं—उस वक्त की, अब की और बीच की भी।

मेरे पास सत्संगी आते हैं। ये लहरें ही उठती है। कोई—कोई जैसे ध्यान में बैठते हैं तो फिल्म ही उतरती है। जैसे फिल्म टेलीविजन पर उतरती है। उसी तरह से यह भी अंतर की फिल्म उतरती है। उन फिल्मों को देखते—देखते सारी ही कहानी समझ आ जाती है। जो जप करता है उसे कुछ न कुछ अवश्य ही मिलता है। लेकिन कबीर साहब ने तो यही बताया है कि इनसे कभी भी मोक्ष नहीं मिलेगा। आप सब गहस्थी हो और आप बार—बार कहते हो—

तपेश्वरी सो राजेश्वरी और राजेश्वरी सो नर्केश्वरी।

गरीबदास जी ये कहते हैं—

तप राज लिया, बड़ा जुल्म किया, अगम अंधेरा नहीं सूझत है।
घट में है तेरे सालिग्राम, तू सही चेतन हो जड़ पूजत है।।

गरीबदास जी ने कितना सुन्दर कहा है—तप द्वारा अगले अंधेरे में तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इसे देखने के लिए तो उल्टा सीधा फिर भागना पड़ेगा। सो यही हुआ, तपेश्वरी सो राजेश्वरी। ध्रुव ने कितना तप किया? उसने बड़ा भारी तप किया। पर कहते हैं कि उसने 36 हजार वर्ष राज भी किया। मैंने यह आपकी भागवत में किसी वक्त सुना था। ये बातें मुझे याद रह जाती हैं। यह तो बड़ा लम्बा समय है। समय कुछ कम ज्यादा भी हो सकता है। पर मेरे दिमाग में यही समय बैठा हुआ है। उसने 36 हजार वर्ष राज किया। अब बताओ जो राज करता है उसमें अन्याय भी हो जाता है। फिर अन्याय करते हैं तो मनु महाराज उसे बचाने की कोशिश भी करते हैं। सो जब बचाने की कोशिश की जाती है तो तुम्हारे मत के अनुसार ही फिर आना पड़ जाता है।

तपेश्वरी सो राजेश्वरी और राजेश्वरी सो नरकेश्वरी।

संत कहते हैं कि जो सतगुरु कबीर से मिल गया उसे यहां वापिस आने की जरूरत नहीं है। जो राधास्वामी दयाल के पास पहुंच गया, फिर उसे आने की क्या जरूरत है? कई लोग कहते हैं

कि अगर वापिस नहीं आएंगे तो वही भीड़ भड़ाका हो जाएगा। अरे, भले आदमियों! भीड़ भड़ाके का फिक्र तू क्यों करता है? वह फिक्र तो खुद मालिक ही करेगा। अगर भीड़ भड़ाका हो भी जाए तो क्या बात हुई? यहां तो फिर जगह हो जाएगी। फिर आराम से यहां कितने ही बसते रहो। सो आगे का फिक्र तो वह खुद करेगा। तर्क वितर्क करने वाले लोग ऐसा कह देते हैं। ये कहते हैं कि जहां अन्न ज्यादा हो और खर्च कम हो तो वहां भीड़ भड़ाका हो जाएगा। अरे भले आदमियों! ये बातें नहीं होती है। जाता भी कौन है?

अरब—खरब में कोई एक महल को जाई रे।

पर यह भी मत सोचना कि जब एक ही महल में जाता है तो हम किस तरह जाएंगे?

गुरुमुख की गति है बड़ी भारी।
गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।

अर्थात् गुरुमुख करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है। गुरुमुख होना चाहिए। गुरुमुख किसे कहते हैं? आप लोग समझे नहीं हो। क्या गुरु के चरण धोकर पीने वाले का नाम गुरुमुख है? नहीं। क्या नोट चढ़ाने वाले का नाम गुरुमुख है? नहीं। हलवा पूरी खिलाने वाले का नाम भी गुरुमुख नहीं है। यह तो संसारी व्यवहार है। गुरुमुख तो वही है जो उस कबीर को पहचान लेता है। जो उस राधास्वामी दयाल, उस सतगुरु ने जो भेद दिया, उस भेद पर चल कर उस शब्द को पहचान लेता है। वह करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है। वह अपने घर पहुंच जाता है। यदि वह मनमुख होता है तो अपना रूप बना लेता है। वह कहता है कि मैं कबीर, दादू, पलटू हूं। वह जीवों का नाश कर देता है। वह खुद और उसके साथी भी अकाल मौत मरना शुरू कर देते है। आप लोगों को नेम बताता हूं। जो झूठा कबीर और स्वामी जी बनता है और जो झूठा पीर बनता है। वह साथ वालों को भी नर्क में ले जाता

है और वे बहुत से दण्ड भोग कर अकाल मौत मरते हैं। मैं उनका खण्डन नहीं करता हूं। मैं इस विषय में राधास्वामी मत की बातें भी बताता हूं कि कई—कई कह देते हैं कि खुद स्वामी जी महाराज ही आ गए। तो क्या स्वामी जी महाराज भूत ही बने फिरते हैं? पागल हो जाते हैं। यह बात कहो कि वे शब्द में समा गए हैं। जब तुम उस गति में पहुंच जाओ फिर तुम कुछ भी बन जाओ तुम्हारी मर्जी है। ब्रह्म तक पहुंचने वाला ही ब्रह्मनेष्ठा कहलाता है। ब्रह्म नहीं बनता है। क्यों नहीं? जब आग में लोहे को दिया जाता है उस लोहे में इतनी तेजी आ जाती है कि वह आग से भी ज्यादा जला सकता है। उससे आग ज्यादा जल्दी लगती है। इतनी जल्दी तो आग से भी आग नहीं लगेगी। पर वह है तो लोहा ही। सो हम शब्द में समा करके शब्द का स्वरूप बन जाते हैं। हम इस घर में चले जाते हैं। फिर भी अगर वक्त आता है तो वह है तो जीव का जीव ही। अब किसी के दिल में प्रश्न भी उठा होगा कि अगर वह जीव का जीव ही है तो हम भक्ति किसकी करें? हमें तो वापिस आना पड़ेगा। ये बातें गलत हैं। ये बातें मत सोचो। अगर तुम ऐसा सोचते हो तो और वापिस आएंगे तो हम भी आ जाएंगे। एक मत वाले कहते हैं कि वहां तो मुक्ति मियादी है। संत कहते हैं कि नहीं, वहां मुक्ति अनादि है। झगड़ा पड़ जाता है। मैं कहता हूं कि दोनों पक्ष झगड़ा मत करो। अगर आओगे तो आ जाओगे और रहोगे तो रह जाओगे। पर पहले जाने की कोशिश तो करो। यह तुम्हारे ही विचारों पर निर्भर होगा। तुम्हारे विचार आने के ही हैं तो आओगे। तुम्हारे विचार रहने के हैं तो रह जाओगे। तुम्हारा जैसा ख्याल होगा वैसा ही हाल हो जाएगा। घबराओ मत। पहले जाने की कोशिश करो। शब्द की कमाई करने की कोशिश करो। किसी के भी झगड़े में मत पड़ो। इसलिए कहते हैं कि तू कितने ही जप और तप कर, कुछ भी कर भजन के बिना निस्तारा नहीं है। कबीर

साहब की वाणी यह कहती है। वे कहते हैं—

जिनकी सुरतां लगी भजन में काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पर आसन रखते, वे योगी हैं अवधूता।।

कबीर साहब का यही शब्द बहुत पहले से मेरी मदद करता था। कबीर साहब की यही वाणी और भी सिद्ध करती है। कबीर साहब की इसी बाणी से कोई कहे कि सोहम्—सोहम् और कोई कहे कि मैं खुली आंखों से दर्शन करूंगा। अगर मैं उनके विचारों को देखूं तो वे गिर जाते हैं। मैं आप लोगों को सनातन धर्म की बातें बताता हूं। खुली आंखों से दर्शन राम, अर्जुन व कष्ण ने किए थे। सोचो! अर्जुन ने कष्ण के विराट स्वरूप के दर्शन खुली आंखों से किए थे। उसका सारा ही मोह दूर हो गया था। उसे एकदम शांति आ गई। उसने हथियार भी उठा लिए और कह दिया कि मैं तो एक निमित मात्र हूं। पर ये लोग कहते हैं कि हम खुली आंखों से परमात्मा के दर्शन करते हैं और फिर वे अहंकारी बन जाते हैं। विषय कमाते हैं। तो फिर वे अर्जुन क्यों नहीं बन सके? वे उस परमात्मा को बट्टा लगाते हैं। यदि उनको वे कहते हैं कि वे बाहर मुखी थे तो काल के जीव थे और फिर वे अन्तर के जीव बन कर उनको धोखा देते हैं। वे कहते हैं कि वे तो झूठे थे और हम सच्चे हैं। खुली आंखों का ध्यान करते हैं। खुली आंखों का ध्यान तो अर्जुन ने कष्ण के विराट स्वरूप का किया था। उसे असीम शांति मिल गई। उसका सारा ही मोह दूर हो गया। भीष्म पितामह जैसे उनके बुजुर्ग थे उनको भी खत्म कर दिया। पर जो खुली आंखों का ध्यान करते हैं उनका मोह भी देख लेना। वे तो कहते हैं कि अपनी औलाद को भी अमर बना जाएं। वे उनको सभी कुछ देना चाहते हैं। फिर वे सारी जिन्दगी ही विषय—विकारों से भी नहीं निकल सकते हैं। तुम मेरे से किसी का नाम भी मत कहलवाओ। वे गिर जाते हैं और यही महाराज चरणदास जी कहते

हैं। लेकिन तीन चीजें आ जाती है। उनमें रजोगुणी और तमोगुणी तो जरूर ही आ जाती है। सो गिरावट आ जाती है। वे कहते हैं कि हम तो अभड़ तो अभड़ का ध्यान करते हैं। अभड़ का ध्यान किसी को कभी नहीं गिराएगा। अभड़ ही होता है। अभड़ किसे कहते हैं—

अभड़ अभंगी पीव है ता का निर्भय दास।
तीन गुणों को मेहल कर, चौथे किया निवास।।

वह होता है—पूजा करने वाला। वह तीन गुणों को छोड़ कर आगे चला जाता है। बताओ, वह खुला ध्यान है या अंतर का ध्यान होता है। कबीर साहब कहते हैं—

आ सतगुरु नैनन में, नैन झांप मैं लूं।
नां मैं देखूं और को, नां तोहे देखन दूं।।

आपने सुना होगा कि कबीर साहब कहते हैं—

नैनन की कर कोठड़ी, पुतली पलंग विछाय।
पलकों की चिक डार के प्रीतम को ले रिझाय।।

अर्थात् इन दोनों आंखों को बंद करके अपने प्रीतम को रिझा ले। इस तरह से वे खुली आंखों का ध्यान नहीं बताते हैं। एक दोहा आता है केवल उसे ही आधार मान कर हम गिर जाते हैं और बाहर के झिलमिलाते सितारे देख कर रजोगुणी और तमोगुणी में फंस जाते हैं। शांति तो अन्तर की वतियों से ही मिल सकती है। हमें अन्तर में ही जाना पड़ता है। सो मैं किसी का खंडन नहीं करता हूं। असलियत में मेरा यही ध्येय था। मैंने छः—छः घंटे खुली आंखों का ध्यान भी किया हुआ है। इसीलिए मैं असलियत भी बता देता हूं। आप लोगों को अंतर में जाना है तो अंतर की आंखों से ही देखना होगा। सो उसने क्या बताया तीनों गुण मेहल करके आगे चलो। चौथे गुण में पहुंच कर ही तुझे पता चलेगा। यही तो तीन लोक का त्यागना है और आगे जाना है।

इसलिए तो कहते हैं—

अभड़ अभंगी पीव है ता का निर्भय दास।
तीन गुणों को मेहल कर, चौथे किया निवास।।
आदि मध्य और अंत लौ अभड़ सदा अभंग।
कबीर ता कर्ता का कभी न छोड़े संग।।

उस अभड़ का कबीर कभी भी संग नहीं छोड़ता है। वह अभड़ कौन है? उसका कबीर कभी साथ ही नहीं छोड़ता। कबीर तो आप उस शब्द को ही बता रहे थे। फिर वह अभड़ कौन हो गया? यही एक बात समझने वाली है।

ऐ कबीर पंथियों! वह अभड़ भी वही शब्द ही है। अब आप पूछोगे कबीर उसका साथ कैसे पकड़ेगा? क्या शब्द का साथ शब्द पकड़ेगा? हां, शब्द का साथ शब्द ही पकड़ेगा। गुरु गुरु से मिला देता है। सो वह अभड़ कभी भी खंडित नहीं होता है। वह अजर अमर है तो वह शब्द भी अजर अमर है। अब आप फिर पूछोगे कि क्या ये दो बन गए? हां दो बन गए। पर दो होकर भी एक ही है। वह कबीर भी अभड़ पुरुष है, वह शब्द भी अभड़ पुरुष है और वही स्वामी अभड़ पुरुष है। अब चक्कर में न पड़ना। मैंने जो पहले बातें कही हैं उन पर अमल करके काम करते रहना। मैंने तो इन लोगों की बातें बताई हैं। अभड़ का ध्यान करना है और अभड़ का ध्यान खुली आंखों से करते हैं और जब हमारी पुतली अंतर में चली जाती है तो बाहर का ध्यान खत्म हो जाता है। एक प्रेमी ने लिखा है कि वह बाहर का ध्यान इस इस प्रकार से करता है। ये सब लिख कर। वह कह देता है कि जब मेरे महाराज का चोला छुटने का समय आया तो उसकी वत्ति अंतर में चली गई। मैंने कहा—अरे बेशर्म तू आखिर में क्यों डूबता है? आखिर में लेखक कहता है कि उसकी वत्ति अंतर में चली गई। फिर तो तूने ये जो बातें लिखी गलत ही लिखी। तुझे ये इस प्रकार नहीं लिखनी चाहिएं थीं।

केवल यही लिखना था कि अंत में भी वत्ति बाहर ही आई। सो अंतर में तो जाना ही पड़ता है। कबीर साहब कहते हैं—

आंख, कान, मुख बंद कराओ, तब देखो गुलजारा है।
कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।

स्वामी जी महाराज ने तो बहुत सी ऐसी बातें लिखी हैं। अरमान साहब भी कहते हैं—

तेरे भीतर बसता आप धनी।
तिलके ओहले पहाड़ खड़ा, चादर खूब तनी।।

तेरे अंतर में धनी बसता है। सो जो अंतर की चद्दर है उसको फाड़ दो। और भी महात्मा यही बात कहते हैं कि—

चश्म बन्द ओ गोश बन्द ओ लव बिबन्ध।
गर न बीनी सररे हक बरमन बखन्द।।

तीनों बंद लगाओ। अगर प्रकाश न हो तो मुझे उलाहना दे देना। ये तीनों बंद नहीं लगेंगे तब तक कुछ भी नहीं बनेगा।

सो ये कबीर साहब की वाणी थी, उन्हीं की बातें चलीं। वह सतगुरु शब्द है और तुम्हारे अंतर में है उसे सतगुरु कहो या ज्ञान या समझ—विवेक कहो। आगे कहते हैं, कई लोग अपने गुरुओं को अंध विश्वासी होकर पकड़ लेते हैं। उन्हीं गुरुओं को दोनों हाथों मजबूती से पकड़ो जिनका शब्द खुला हुआ हो। आप कहोगे कि हमें शब्द खुलने का कैसे पता लगेगा? उसकी निशानी यही है कि उसका सत्संग एक नहीं मिलेगा। वह जो सत्संग करेगा सब ही अलहदा—अलहदा मिलेंगे। ये मैं शब्द भेदी सतगुरु की बातें बताता हूं। क्योंकि यदि वह आधा घंटा भी ध्यान में जाएगा वह तो वही बात कहेगा जो उसने अपने अन्तर में देखी है। उसका सत्संग एक जैसा नहीं होगा और वह पोलिसी भी नहीं लगाता है और बनावटी बातें भी नहीं करता है। वह तो सीधी बातें, जैसी देखता है वैसी ही बता देता है। कई—कई महात्माओं के 20–30 सत्संग

सुनते हैं उनमें वही बातें आती रहती हैं तो समझ लो विद्वानों की याद की हुई बातें ही हैं। 'उस घर' की बातें नहीं हैं। सीख लेते हैं। सो सीखने के बारे में कबीर साहब ने तो बड़ा खण्डन किया है। वे कहते हैं—

लाया साखी बनाय कर, इत उत अक्षर काट।
कहैं कबीर कब लग जिए, झूठी पत्तल चाट।।

वे झूठी पत्तल चाटने वाले कब तक जीएंगे? विद्या के बल से हम इधर—उधर से शब्दों को काट—काट करके बातें तो बना लेते हें बातें। पर सतगुरु तो अनुभवी होते हैं और धुर से ही अनुभवी आते हैं। दाता! मेरे भाग अच्छे थे जो इस राधास्वामी मत में आया। दूसरे हजूर महाराज सतगुरु अरमान साहब की शरण में चला गया। भाग अच्छे क्यों थे? स्वामी जी महाराज धुर दरगाह का अनुभव लेकर आए थे। उनके शिष्य पूर्ण गुरुमुख थे। सवेरे—सवेरे उनका नाम लेने से भी पाप कट जाते हैं। हजूर महाराज राय सालिगराम जी और उनके शिष्य महर्षि शिवव्रतलाल जी जिन्होंने असंख्य पुस्तकें लिखीं। बाबा सावण सिंह जी ने भी उनका लोहा माना। उन्होंने भी कहा—धन्य हो ! मेरे भाई करणी के धनी हैं। मेरे भाई वक्त के शहनशाह हैं, वेद व्यास जी ने तो दो चार ही पुस्तकें बनाई थी ये आधुनिक वेद व्यास ही नहीं उन से भी ऊंचे हैं। वे भी अनुभवी थे और ऐसे ही मेरे सतगुरु अरमान साहब जी का काम था। उन्होंने अपना जीवन उन्होंने पवित्र बिताया। मैं उन्हीं का वंशज हूं।

सो वही कबीर जी की बातें आ जाती है। सतगुरु तो कबीर ही होता है। उनमें शब्द की धार थी और उस धार ने सारा काम कर दिया। सो प्रेमियो, सत्संगियो! जब अनुभव होता है तो वह कभी भी बनावटी बातें नहीं कह सकता है। बनावटी बातें तो बनावटी ही रहती है। वे खिंचाव नहीं करती हैं। संत सतगुरु तो अपना ही तजुर्बा बताते हैं। हजारों सत्संग करेंगे तब भी अपना ही

तजुर्बा बोलते हैं। वे हिन्दी की चिन्दी नहीं बनाते हैं और चिंटी की खाल नहीं उधेड़ते। वे तो अंतर की बातें कह कर चले जाते हैं। उन गुरुमुखों का संग करने से हमारा उद्धार हो जाता है। आगे कहते हैं—

जिनकी सुरता लगी भजन में। काल जाल से नहीं डरता।।

जिनकी सुरत भजन में लग गई है वे काल से नहीं डरते हैं। क्यों? आपने सुना है—

जाप मरै अजपा मरै अनहद भी मर जा।
सुरत समानी शब्द में तांहि काल न खा।।

जिसकी सुरत उस शब्द में समा जाती है, वह सतगुरु का रूप बन जाती है। उसको काल खा नहीं सकता है। काल तो अहंकार को ही खाता है। वे अहंकार रहित हो जाते हैं। उस सतगुरु का रूप हो जाते हैं। लड़की जब अपने पति के घर चली जाती है तो वह अपने मां—बाप का नाम खत्म कर देती है। वह अपना नाम भी खत्म कर देती है। क्योंकि ससुराल आने पर उसके साथ पति का नाम जुड़ जाता है और उसे उसकी पत्नी कह कर ही पुकारा जाता है। इसको कबीर में समाना कहते हैं। आगे कहते हैं।

अधर अणी पे आसन रखते सो योगी हैं अवधुता।

अब वह कौन सी अधर अणी है? कबीर साहब और स्वामी जी ने सब ने नीचे का वर्णन किया है। गुदा चक्कर से, जहां से योगी चला करते थे। उस वक्त उम्र लम्बी होती थी। सतयुग में एक लाख वर्ष की उम्र थी, त्रेता में दस हजार वर्ष की उम्र थी। द्वापर में हजार वर्ष की और कलयुग में जू वर्ष की उम्र रह गई है। सो वे हिस्से कर लिया करते थे। पर वे 100 अधर अणी से नहीं चलते थे। वे तो गुदा चक्कर से चलते थे। योग अभ्यास करते थे और जहां वे टिक जाते थे उसी स्थान को बड़ा मान लेते थे। वहीं से उनका मत चल पड़ता था। इसीलिए इस देश में इतने मत फैल

गए, जो जिस मंजिल तक पहुंचा उसने वहीं पर अपना मत बना लिया। जो जिस स्थान पर जो टिका उसी को बड़ा मान लिया। उस समय उनमें ऋद्धियां—सिद्धियां करामातें आ जाती थीं। ये अधर अणी कहां है? अधर अणी तो ये छठा चक्कर है। कई कहते हैं कि गोरखनाथ जी कबीर साहब के पास गए। गोरखनाथ जी ने वहां जाकर त्रिशूल की अणी पर अपना आसन लगा लिया। वहां धूणा रख लिया। गोरखनाथ ने कहा—कबीर! ऊपर आ जाओ। नीचे तो बदबू आती है। अब उसने तो उस अणी पर आसन लगा रखा था। कबीर साहब ने नली ऊपर फैंक दी और नली के सहारे चढ़कर आसमान में ही अपना ताना खट खटाना शुरू कर दिया और गोरखनाथ से कहा—आ जाओ गोरखनाथ! और भी ऊपर आ जाओ। अब क्या था? क्या देहधारी कबीर वहां चला गया? वह गोरखनाथ देहधारी था। गोरखनाथ का तो आसन ही अधर अणी पर था। कबीर साहब अधर अणी से आगे गया था। इसीलिए कहते हैं—

गोरखनाथ का संशय मिट गया, सतगुरु मिले कबीरा।
जल की तुम्बी रूखां लागी भव सागर के तीरा।।
गोरखनाथ का संशय मिट गया। सतगुरु मिले कबीरा।।

तब गोरखनाथ शब्द स्वरूपी कबीर साहब को मिल गए। कबीर जी को तो पैदा हुए छः सौ वर्ष हो गए और गोरखनाथ को तेरह—चौदह सौ वर्ष हो चुके हैं। पर गोरख और कबीर आज भी हैं। गोरखनाथ किसको कहते हैं? इसे आप नहीं समझते हैं। जो दसों इन्द्रियों को पार करके उसके आगे चला जाता है, नौ नाथों को यानि नौ द्वारों को बंद करे तब गोरख का पता लगेगा।

इसीलिए कबीर ने उनको ऊपर बुला लिया। कबीर तो सतखण्ड से भी आगे था। उसने कहा—गोरख शब्द की डोरी पकड़कर ऊपर आ जाओ। अधर अणी या त्रिशूल इस छठे चक्कर

को ही कहते हैं। यहां ये तीन नाड़ियां हैं। इन तीनों नाड़ियों का ही त्रिशूल का नक्शा बताया जाता है। पर लोग इसे समझा नहीं सकते। ये लोग तो टुक—टेर (टुकड़ों पर पलने वाले) बन जाते हैं। त्रिशूल और चिमटा ले लेते हैं और झगड़ा करना सीख लेते हैं। अगर ये त्रिशूल के ऊपर अपनी धूणी या आसन लगा लें, तो इनकी सात पीढ़ियां ही तिर जायें। पर ये तो बाहर के त्रिशूल पर भी नहीं बैठ सकते। जो यह नाक की डण्डी है, ये त्रिशूल की डंडी है। यह त्रिशूल की तीन नाड़ियों—ईंडा, पिंगला और सुषुम्ना का है। इस सुषुम्ना के रास्ते से चढ़ा जाता है। ये अधरअणी है। इसके ऊपर आसन लगा लेना है वह आसन कौन सा है? क्या यह वही आसन है जिस आसन में हम बैठते हैं। इस आसन में हमारी वत्ति इस जगह पर टिक जाती है। यही आसन है। इसके द्वारा हम ऊपर चले जाते हैं। इसके नीचे तो कब्रिस्तान है। इसके नीचे—नीचे ही स्वर्ग, वैकुण्ठ हैं। इसके नीचे मुक्ति नहीं है। संत इसका निशाना समझा कर बता देते हैं। इसके ऊपर चलो। जब तुम ऊपर चलोगे, तो फिर तुम्हें कबीर खुद ही ले जाएगा। कौन सा कबीर ले जाएगा। वह शब्द स्वरूपी कबीर ले जाएगा। शब्द—शब्द से मिला देता है। पहला शब्द दूसरे से मिला देगा। दूसरा तीसरे से, तीसरा चौथे से और चौथा पांचवे से। पांचवा 'उस' जगह पर पहुंचा देगा। इस अधर अणी पर आसन लगाने का मतलब यह है। कबीर साहब के मतलब का तो पता नहीं है पर मेरा अर्थ तो यही बनता है। अधर अणी पर, इस अणी पर जिसका आसन लग जाता है वह तिर जाता है और यही त्रिशूल था और इसी तरह गोरखनाथ का इस जगह का आसन था। जब इस जगह गोरख नाथ का आसन लगा तो उसे आगे का शब्द सुनाई दिया। शब्द सुनकर और उसे पकड़कर आगे चले तभी उन्होंने कहा—वाह! मेरा तो संशय मिट गया है।

जल की तुंबी रूखां लागी भवसागर के तीरा।
गोरखनाथ का संशय मिट गया, सतगुरु मिले कबीरा।।

सो वह देहधारी कबीर नहीं था। उन्हें शब्द स्वरूपी कबीर मिला था और उस शब्द स्वरूपी कबीर ने उनको मंजिलें—मंजिले सतखण्ड में पहुंचा दिया। तब तक तो वह गोरखनाथ था और इसके बाद वह नाथों से आगे चला गया। वह करणी का धनी हो गया। सो अधर अणी पर आसन लगाने वाला संत नहीं है। वह तो अवधूत ही होता है। यहां पर तो अवधूता बनते हैं। फिर जो इससे आगे चलते है वे साधु बन जाते हैं उससे आगे चलने वाले हंस और उससे भी आगे वाले परम हंस बन जाते हैं। उससे आगे वाले संत हो जाते हैं। उससे भी आगे जो पहुंच जाते हैं वे परम संत बन जाते हैं। आगे कहते हैं—

सोवतड़े नर गए चौरासी जागतड़ा ने जुग जीता।
रामानन्द के कहत कबीरा, मंजिले—मंजिले जा पहुंचा।।

अधर अणी पर आसन लगाने के बाद पांच धुनियां जो बता दी है वे आती हैं। उन पांचों का सुमरन बना लिया। ये पांच धुनी सिखों में भी थी। पर वे उनको पांच प्यारे बना बैठे। ये पांच धुनी हिन्दुओं में भी थी। उन्होंने उनका पंचामत बना लिया। यह पंचामत आर्य समाज में भी है। उन्होंने पांचों का ओ३म् भूः, ओ३म् भवः, ओ३म् महः ओ३म् जन, ओ३म् सत, इस तरह करके वे रह गऐ। ये पांचों धुनी मुसलमानों में भी थी। उन्होंने नासुत, मालकुत, जबरूत, लाहुत और हुत बना दिए। सो ये पांचों धुनियों को छोड़कर और ही बातों में फंस गए। धुनी तो धुनात्मक है। जो उन पांचों धुनियों को पकड़ लेता है, वह मंजिलें—मंजिले पहुंच जाता है। जैसे मैंने कबीर साहब की मंजिले बताई हैं। ये मेरी बनावटी बातें नहीं हैं। पहली मंजिल में तो राम नाम वाले फंसा दिए। पर कबीर साहब ने तो आगे जाना था, दूसरी में ओहम्—सोहम् वाले

फंसा दिए। ये न्यारा जाप है। तीसरी में सोहम् वाले फंसा दिए। इन लोगों को भी पता नहीं यह सोहम् का जाप कहां होता है? जबानी सोहम् का सुमरन सिखा देते हैं। अब बताओ यदि किसी का नाम किरोड़ी रख दे और पैसा उसके पास नहीं है, तो वह क्या करेगा? वह बेचारा तो भड़क कर ही मरेगा। सो जहां पर सोहम् का जाप होता है, ध्वनि है उस जगह पर तुम पहुंच जाओगे तो बड़ी करणी कर लोगे। ऋद्धियां—सिद्धियां चंवर ढुलाना शुरू कर देंगी। पर सोहम् के देश का ही पता नहीं है तो कहां पहुंचोगे? सो इन झूठे गुरुओं ने जीवों का अकाज ही किया है। काल के मत चलाए। काल के पंथ बताए और काल के ही जाल में जीवों को फंसा दिया।

आप कबीर साहब का **32** कड़ी वाला शब्द सुनो। वे क्या कहते हैं? वे बताते हैं कि सोहम् किसका नाम है। सोहम् काल का नाम है। सोहम का अर्थ है—तू भी ब्रह्म और मैं भी ब्रह्म। मुसलमान उसे अनाहू कहते हैं। अब बूंद समुद्र को देख कर कहती है कि तू भी समुद्र है और मैं भी समुद्र हूं। इसी लिए उसको काल कहते हैं। भानीनाथ ने उसको कहा है—

राम झरोखे बैठ कर सबका मुजरा ले।
जैसी जिसकी नौकरी वैसा ही फल दे।।

उनका शब्द लेते हैं उसमें कहा गया है—

हां म्हारी हेली, कांकड़ बैरी का बास।
मारेगा छोड़े नहीं जहां चालैं गैब की गोली।।

वहां गैब की गोलियां चलती हैं। उसके आगे दयाल है। सोहम् के स्थान पर काल है। उस सोहम के देश को ही नहीं बताया तो वे जीव कैसे निकलेंगे? उस शब्द का नाम बताता हूं। जैसे राधास्वामी की धुनी की धार ऊपर से मंडल रचती हुई आई और सभी जीवों में फंस गई। विकारों में फंस गई। जब हम विकारों

से मुड़ कर उस धार को ही मोड़ लेते हैं तो वही धार छठे चक्कर पर आ जाती है। छठे चक्कर पर उस स्थान का नाम बन गया और उसके आगे दूसरा बन गया। वहां वह धार पवित्र थी पर नीचे वह धार अपवित्र हो गई। उल्टी जब मुड़ती है तो फिर पवित्र होकर राधास्वामी धाम में चली जाती है। इसी तरह कबीर साहब ने जीवों को नीचे से ऊपर ले जाना शुरू किया। तो सोहम् तक तो काल का देश था। उससे आगे अगला शब्द बता दिया। उससे आगे फिर दूसरा शब्द बता दिया। इसने कितने नाम बताए? इन नामों में फंस जाते हैं।

मेरे पास एक प्रेमी आया। उसने कहा—आप क्या करते हो? मैंने कहा—कुछ नहीं करता। मैं तो एक ही चीज जानता हूं ''राधास्वामी'' नाम को। उसने कहा—राधास्वामी से पहले क्या था? मैंने कहा—मैं आपको बता दूंगा कि उससे पहले क्या था? उसने कहा—बताओ? मैंने कहा—कोई पंडित राजा के द्वार पर जाता था। राजा ने पंडित से कहा—पंडित जी, (राजा के दिल में गुरु धारण करने की मंशा थी) मैं आपसे एक बात पूछता हूं। मुझे आप बताओ कि परमात्मा से पहले क्या था? दूसरे परमात्मा कहां रहता है? तीसरे वह क्या करता है? इस तरह की बातें उसने पूछीं। पंडित जी बैचन हो गया। उस बेचारे ने तो पुस्तकें ही पढ़ी थी। उन पोथियों में ये बातें थी ही नहीं। क्योंकि—

पोथी तो थोथी भयीं, पंडित भये गुलाम।
भोजन वस्त्र चाहवे, मांगैं रोकड़ी दाम।।

उन रोकड़ी दाम मांगने वालों की ये बातें हैं। पंडित तो सारी दुनिया का गुरु होता है। वह सारी दुनिया का उद्धार भी कर देता है। आपने सुना भी होगा—

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणै। बाहर जांदा भीतर आणै।।
पांचों वश कर झूठ नहीं भाखै। दया जनेऊ घट में राखै।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार न होई।
चरणदास ब्राह्मण है सोई।।

यही गीता कहती है—ब्राह्म पिछाणै सोई ब्राह्मण। सो जो ब्रह्म को पहचान लेता है, वही ब्राह्मण है बाकी सभी पंडित हैं। तुम सारे ही पंडित हो। अब पंडित जी बन जाओ। पिंड तो यह शरीर है और इसमें तुम्हारा जी है। कहता है कि जो जीव है और जो इस पिंड में रहता है, वही पंडित जी है। पर मैं ब्राह्मणों को सिर झुकाता हूं। ब्राह्मण तो एक ही सारे देश का उद्धार कर देता है। ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म को पहचान ले।

पंडित ने राजा से कहा—बता दूंगा जी। पर वह उदास होकर घर आ गया। उस ब्राह्मण का भी एक महात्मा गुरु था। वह घर पर उदास बैठा था और वह महात्मा आ गया। उसने पूछा—भाई, पंडित जी! आज उदास क्यों हो? मैंने महात्मा से यह मिसाल सुनी है, वही बताता हूं। पंडित ने कहा—क्या बताऊं? मैं तो कल मारा जाऊंगा। क्योंकि राजा ने कह दिया कि या तो मेरे इन तीन प्रश्नों के उत्तर दे, नहीं तो तेरा कच्चा—बच्चा कोल्हू में पीड़ दिया जाएगा। महात्मा ने प्रश्न पूछे। पंडित ने बता दिए। पहला प्रश्न है कि परमात्मा से पहले क्या था? दूसरा वह रहता कहां है? तीसरा वह करता क्या है? महात्मा ने कहा—कोई बात नहीं। तू बेधड़क होकर नहां धो और भोजन कर। राजा से कह देना कि ऐसी छोटी—2 बातें मैं क्या बताऊंगा। मेरा घसियारा है वही बता देगा। पंडित ने कहा—क्या मैं अपने सतगुरु को नौकर कहूं? महात्मा ने कहा—अरे पगला ! कभी गाड़ी नाव में होती है और कभी नाव गाड़ी में होती है। सतगुरु और गुरुमुख दो नहीं होते हैं।

गुरु भी पूरा चेला भी पूरा, बड़े भाग से मेल मिलाई।

यह मेल बड़े भाग से मिलता है। पर—

गुरु लोभी, शिष्य लालची दोनों खेलैं दाव।
अध बीच में डूबसी चढ़ पत्थर की नाव।।
गुरु किया है देह को सतगुरु चिन्हा नाहिं।
भव सागर की धार में फिर—फिर गोते खाहिं।।
देह का गुरु, देह का चेला।
दोनों नर्क में ठेलम, ठेला।।

देह का का नाम गुरु नहीं है। गुरु नाम तो शब्द का है। कबीर साहब का नाम है।

मैं आपको पंडित बता रहा था। पंडित चला गया और जाकर उसने राजा से कहा—मेरा घसियारा आपके बाग में बैठा है। उसको बुला लो। राजा ने उसको बुलवा लिया। घसियारा तो अलग ही दिखाई दे जाता है। राजा ने समझ लिया कि यह तो कोई महात्मा है। पंडित जी को तो वे बातें बतानी नहीं आई है क्योंकि वे तो पुस्तकों को ही पढ़ते हैं।

आप लोग भी पागल हो जाते हो। आपको गीता के लम्बे—चौड़े अर्थ बता दिए जाते हैं तो। पर गीता के अध्याय को तो तय करते ही नहीं हैं। गीता तो शरीर है। गीता के अट्ठारह अध्याय हैं और वे अध्याय शरीर में भी हैं। तुम्हारे शास्त्र कहते हैं उनको तय करके ऊपर चलोगे तभी तुम्हारी गीता पढ़ी जाएगी। एक बार अगर यह गीता पढ़ ली तो निश्चय ही पार हो जाओगे। सारी उम्र ही गीता को पढ़ते—पढ़ते निकल जाती है, पर तुम्हें कुछ पता नहीं लगता है और दिल में शांति नहीं आती है। सारी उम्र ही भागवत पढ़ते—पढ़ते गुजर जाती है। अहंकारी बन जाते हो, पर मुक्ति का मुंह कभी भी नहीं देख सकते हो। सारी उम्र रामायण पढ़ते—पढ़ते चली जाती है। उसे कंठस्थ कर लेते हो, पर रामायण के उसूलों को नहीं पकड़ते हो। फिर क्या रामायण पढ़ी? रामायण में तो भाई—भाईयों का प्यार है। उसमें बाप—बेटों का प्यार है।

रामायण में तो गुरु शिष्य का प्यार है। रामायण में करणी भी लिखी है और ऐसी करणी लिखी है जो राम से भी आगे की बता दी है कि उस करणी को तो राम भी नहीं पा सका। नाम तो राम को भी नहीं मिला। वह नाम राम से भी आगे है। तुलसी दास जी कहते हैं–

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुण गाई।।
राम ने एक तापस तिरिया तारी।
नाम ने कोटि खल कुमत सुधारी।।
ब्रह्म राम से नाम बड़ा, बरदायक बरदान।
रामायण शत कोटि कर, लिए महेश जी जान।।

सो रामायण को याद करने से उद्धार नहीं होगा। रामायण के उसूलों पर चलने से उद्धार होगा। रामायण में लिखा है कि राम चन्द्र जी तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे और चौदह वर्ष तक वन में रहे, पर जो रामायण का पाठ करते–करते उसके (रामायण के) माहिर बन जाते हैं और फिर छः–छः बच्चे पैदा कर लेते हैं। क्या वे राम की मर्यादा पर चलते हैं? क्या वे हमें और आपको पार उतार देंगे? वे तो रामायण को बट्टा लगाते हैं। रामायण के पढ़ने वाले को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। तभी उसका जीवन सफल होगा और तभी वह औरों का जीवन सफल कर सकता है। जिसका ब्रह्मचर्य गिर गया है वह चाहे 17 रामायणें पढ़ता रहे वह न आप तिरेगा और न औरों को ही तार सकेगा। हां, बातों के चक्कर में वह सब को डाल देगा। संतों ने रामायण का खंडन नहीं किया। इन लोगों के कर्म का खंडन किया है। सो ये कर्मकांडी बन जाते हैं। वे कभी भी शब्द के घर में नहीं जाते हैं। मैंने आप लोगों को किसी का खंडन करके नहीं बताया है। मंडन करके ही बताया है। अगर वे करणी करें तो। शब्द के बारे में तो सभी ग्रंथों ने लिखा है और ये अठारह महाभारत के पर्व तुम्हारे 18 अंतर क चक्र हैं। 6

पिंड के, 6 ब्रह्मंड के और 6 पार ब्रह्म के। सतगुरु इनका निर्णय करके बता देता है।

आगे कबीर साहब कहते हैं कि मैं रामानन्द का कबीर मंजिलें–मजिलें जा पहुंचा। सो वे मंजिल कौन सी हैं? वे मैंने आपको बता ही दी हैं। उन मंजिलों से होता हुआ अपने घर में पहुंच गया। कहां? जिस घर से आया था वहीं। वह शब्द राधास्वामी धाम से आया था। वह शब्द संत कबीर के दरबार से आया था। वह शब्द ही तो नीचे बनता आया था। उस शब्द ने ही नीचे आकर सारी मंजिलों के ठेके रच दिए हैं और जब सतगुरु पूर्ण मिल जाता है तो उस शब्द को मंजिले–मंजिले चढ़ाते हुए राधास्वामी धाम में पहुंचा देता है। उस शब्द को पकड़ करके जीवात्मा अपने घर पहुंच जाती है। यह मंजिलें–मंजिलें पहुंचने का मतलब है और कोई मतलब नहीं है। आप मेरे पास आते हो। मेरी ड्यूटी है उसे मैं बजा देता हूं। क्या करूं? मेरे गुरु ने कहा था कि आप बेधड़क होकर कहना। मेरा हाथ तेरी पीठ पर रहेगा। वे पूर्ण पुरुष थे। महाराज पं० फकीरचन्द जी ने कहा था–"मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। मेरा हाथ तेरी पीठ पर रहेगा। तू बेधड़क होकर बोलना। तू सच्चा आदमी है। पर एक बात करना, सतगुरु न बनना।" सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। इसलिए मैंने कह दिया कि तुम्हारा सेवक हूं। मैं सतगुरु नहीं हूं। मैं तो सतगुरु की ड्यूटी बजाता हूं। सो मैंने आप लोगों को काफी सत्संग सुनाया। एक शब्द और कह दूंगा। यह गोरखनाथ जी और कबीर का है। गोरखनाथ ने बड़ी भारी बेधड़क बातें कही हैं। कबीर साहब का संग करके वही गोरख गोरख बन गया। गोरख कहते हैं इंद्रियों को काबू में रखने वाले को। तो इंद्रियों को काबू करने वाला कबीर से भी मिल जाता है। इंद्रियों को काबू करने वाला कोई भी हो वह भी गोरख बन जाता है। सो आगे चला जाता है। शब्द कबीर में मिल कर अपने घर चला जाता है। आप भी मंजिले–मंजिले शब्द में मिलकर अपने घर चले जाओगे। इस शब्द ने मेरी तो बड़ी मदद की है। मैं ये शब्द मैं जब

भी किसी बात को चूक जाता और मेरे दिल में अशांति होती, तो मैं यही कहा करता था—

टिका रह टिका रह, मत हो डांवा डोल।
डिगे की कौड़ी नहीं टिके के लाखों मोल।।

कि अपना भजन कर। भजन कब किया जाता है? सतगुरु अधूरा है तो गिर जाओगे। सतगुरु सांगी है, तो तुम भी सांगी बन जाओगे। सतगुरु ने चारों युगों में कोई सांग नहीं किया। सतगुरु तो सतगुरु ही बनकर आये हैं। आज तो सतगुरु बन कर सांग करते हैं ये काल के ठेके रचे हुए हैं। मैं ये बातें बेधड़क होकर कहता हूं। ये काल महाराज के ठेके हैं। अगर काल ऐसे प्रपंच नहीं रचे तो उस का देश ही उजड़ जाएगा। कबीर, दादू, पलटू, रैदास आदि सभी सन्तों का ये करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं है। गोरखनाथ जी कहते हैं—

जाऊं—जाऊं सब करैं, मोहे अंदेशा और।
सतगुरु के परचे बिना, पहुंचोगे किस ठौर।।

उसके परिचय बिना कहा पहुंचोगे? जब सतगुरु सैन देगा तभी उन मंजिलों पर पहुंच सकते हो।

जहां से आई वहां जाओ हे ज्वाला। हम जागा जग सूता जी।
शक्ति गोरख छलने को आई, बहुत किया उत्पाता जी।
गोरख यति डिगा न डिगाया, गुरु ज्ञान मदमाता जी।।
उठत मारूं, बैठत मारूं, मारूं जागत सूता जी।
तीन लोक में मेरा पसारा, तू कित जागा अवधूता जी।।
ऊठत सुमरूं बैठत सुमरूं, सुमरूं जागत सूता जी।
तीन लोक से न्यारा खेलूं मैं योगी अवधूता जी।।
त्यागी के संग लागी रे डोलूं, लोभी कर—कर लूटा जी।
शरण मच्छन्दर यति गोरख बोला भजन करै सोई छूटा जी।

प्रेमियो, मैंने एक बात कही है कि संत सतगुरु की दया होती है, तो सब कुछ बन जाता है।

गुरु बढ़ाए सब बढ़े बलकर बढ़ा न कोय।
बलकर रावण हिरणाकुश बढ़े जड़ा मूल से दिए खोय।

सो गुरु के बढ़ाने से सभी बढ़ते हैं। गुरु अरण्ड के वक्ष को चंदन बना देता है। मैं सतगुरु की बातें कहता हूं। सतगुरु पारस होते हैं—

पारस और गुरु में बड़ो अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करे, गुरु कर ले आप समान।।

पारस लोहे को सोना बना सकता है, पर वह लोहे को अपने (जैसा) पारस नहीं बना सकता है। सतगुरु तो अपने जैसा (पूर्ण ही) बना सकता है।

अब अपने जैसा बनाने का मतलब भी आप समझते हो कि गुरु कामी है, तो अपने शिष्यों को कामी बना लेगा। पाखण्डी होगा, तो शिष्यों को पाखण्डी बना लेगा। अगर पूर्ण होगा तो अपने शिष्यों को पूर्ण बना लेगा। मेरे तो भाग अच्छे थे कि पूर्ण सतगुरु मिला। उनकी बड़ी अपार दया थी। अगर वे मेरे को धोखे में रखते, तो मैं उनके पास कभी भी नहीं जाता। उन्होंने कहा—तुम मेरे पास फायदा उठा सकते हो। मैंने सोचा कि अपना चेला बनाने के लिए ऐसा कहता है। फिर भी मैंने सोचा कि देखो। अब मैं कहता हूं कि नहीं, ये तो उनका मेरा संस्कार ही था। मैं उन गुरुओं की दशा देख—देख कर घबरा गया। इन गुरुओं के नाम लूं, तो इन गुरुओं की तेरहवीं कराने के लिए ही सतगुरु आए थे। कोई किसी तरह मरता है और कोई किसी तरह मरता है। संत सतगुरु तो मेरा ही था कि सारी जिन्दगी 90 वर्ष की आयु तक पोथी जैसे रहे कभी भी डाक्टर की दवाई नहीं ली। न कभी बीमार हुए। इसलिए अपने सतगुरु को सतगुरु कहता हूं। तीन दिन पहले ही बता दिया कि मैं फलां दिन जाऊंगा और उसी टाइम पर चले गए। सो सतगुरु सतगुरु ही होते हैं। जो दुख पाकर मरता है उसको सतगुरु मत कहो। मुझको मेरी चार पीढ़ी का तो ज्ञान है। स्वामी जी महाराज,

इसी तरह गए। हजूर महाराज जी कह कर गए। महाराज शिवव्रतलाल ने तो दूध इकट्ठा करवाया। छः महीने पहले ही बता दिया था। अपना सारा काम आप करके दूध में नहाए। नहाकर कहा कि आज हमारा जाने का टाइम है। मेरे सतगुरु शहनशाह थे। सतगुरु की शरण लेकर जीव का उद्धार हो जाता है। मैं सतगुरु की बातें करता हूं। आज तो कुंडा उठाते हैं तो 17 गुरु निकलते हैं। वे अपना पेट भरने वाले गुरु होते हैं।

पहले विषय कमाए, फिर गुरु बन जाए।

अपना काम करो और मजे करो। प्रेमियो ! मैंने कबीर के शब्द का निर्णय करके बताया है। कबीर साहब का भी निर्णय कर दिया कि कबीर चारों युगों में इस तरह से थे। तुम तो कोई प्रश्न भी नहीं कर सके। मैंने खुद ही प्रश्न करके जवाब दे दिए। पर मैं इन कबीर पंथियों को पूछना चाहता हूं कि क्या कभी इन्होंने कबीर की बातें सोची? वे तो इन बातों के नजदीक भी नहीं गए। फिर निर्णय कौन करे और कैसे करे? ये कबीर को समझ लेते तो तिर जाते। सो जो सतगुरु मिल जाता है तो परेशानी दूर हो जाती है।

जिनको सतगुरु मिलिया, उनका लेखा निमिड़िया।

उनका भ्रम दूर हो जाता है। जब तक भ्रांति है, तो शांति नहीं आएगी। संशय दूर नहीं कर सकता तो संसार नहीं छुट सकता।

मेरी ड्यूटी आप लोगों को समझाने की थी। सतगुरु का प्रसाद यही होता है। तुम झूठा खाते हो, ये प्रसाद नहीं होता। अगर कोई कोढ़ी हो तो क्या तुम झूठा खाकर कोढ़ी बन जाओगे। पर सतगुरु तो कोढ़ी नहीं होता है। सतगुरु अंगहीन नहीं होता है। सतगुरु तो पूर्ण होता है। फिर भी मेरे गुरु ने मुझे यह शिक्षा नहीं दी। मैं आर्य धर्म के विरूद्ध बातें नहीं करता। झूठा किसे कहते हैं? संतों का प्रसाद तो संतों की जुबान से निकलता है। उसे दिमाग में रख लो। यह प्रसाद तुम्हें तार देगा। तुम तो झूठी रोटी को खाने की कोशिश करते हो कि हमें मिल जाए। यह तो कोई भी खा

सकता है और कई—कई तो कुत्तों के झूठे को भी खा लेते हैं। यह नहीं। हम नहीं कहते। हम तो यहां कहते हैं कि सतगुरु का प्रसाद लो और अपने दिमाग में रख लो। यहां कितनी संगत आई हुई है सब को सतगुरु का प्रसाद मिला है। वह सतगुरु का प्रसाद तुमने समझ लिया कि कबीर क्या था? इसे अपने दिमाग में जंचाओ। तुम कबीर से या राधास्वामी दयाल से मिलो, वह तुम्हारी रग—रग में भरा है। जर्रे—जर्रे में है अगर तुम उससे मिलना चाहते हो तो। पर रहबर के बिना वह नहीं मिलेगा। रहबर के बिना रास्ता नहीं मिलेगा। सो पहले पूरा रहबर ढूंढना पड़ेगा। सारी मंजिलों का वाकिफकार मिले तब उस घर में पहुंचोगे। सतगुरु के बिना तो सुरत अंधी ही रह जाती है। अगर तुमने कह दिया कि उस जगह यह मिला उस जगह ये मिला, बिना देखे सब धोखा है।

मैंने एक प्रेमी से पूछा—क्या देखा? उसने कहा—वहां तो बड़ा भारी तख्त बजीणा है। कौशल है, बाग है। आनन्द परमानन्द बाग है। फलां बाग है। मैंने पूछा—कौन से स्थान से आगे है? उसने कहा—सतखण्ड से आगे। मैंने कहा—तू एक बार उस भवर गुफा का वर्णन तो कर दे। तू तो उसके अंदर से ही निकला है। कबीर साहब क्या कहते हैं उसमें 88 हजार दीप है, उस पर 88 हजार पुस्तकें बन सकती है। तू एक बार उसका वर्णन करके दिखा दे। तुम काल के मुंह में बैठे हो और अपने शिष्यों को भी काल में ले जाते हो। धोखा देकर जाते हो। जो तुम शिष्यों को धोखा देते हो, उसका पाप तुम्हें दुख देता है। तुम अकाल मौत मरते हो। जो अपने शिष्यों को धोखा देते हैं। सो पहले अपनी ही आत्मा को धोखा दिया जाता है। मैं तो सीधी बातें कहता हूं कि वे खुद भी सड़ते हैं। औरों को भी धोखा देकर चले जाते हैं। सतगुरु धोखा देने के लिए नहीं आते हैं वे बेधड़क होकर कहते हैं। धोखा तो पापी और रोजगारी, मान बड़ाई वाले, घमण्डी देते हैं। सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। वह धोखा नहीं देता। उसको यह भी घमंड

नहीं होता है क्या करता है या क्या नहीं करता है। लोग एक बार चले जाए घमण्ड हो जाता है। कोई भी अच्छा काम करने से घमण्ड हो जाता है। घमण्ड किस का करते हैं। जो सतगुरु का हुकम होता है तो वहीं तो करते है। यह शरीर तो सतगुरु का चरखा है। जब हम सतगुरु के अर्पण हैं, कबीर, दादू, पलटू के अर्पण है, जब स्वामी जी के अर्पण हो गए तो फिर हम घमण्ड किसका करेंगे? हमने तो उन्हीं में समाना है। वह आप ही हमारी रक्षा करेंगे। उस शब्द में समा जाओ।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

मार्च/अप्रेल मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	पानीपत	22 - 28 मार्च
2	बनवासा	29 - 04 अप्रेल
3	गोहाना	05 - 11 अप्रेल
4	कैथल	12 - 18 अप्रेल
5	ईस्माइलपुर	19 - 25 मार्च

आगामी सत्संग कार्यक्रम

13 अप्रेल	मंगलवार (वैशाखी)	हांसी
02 मई	रविवार	भिवानी

जीवों को बीमारी क्यों होती है?

भाग -2

महर्षि शिवव्रत लाल जी

मल के दूर करने और मन तथा शरीर को सूक्ष्म बनाने के लिये।

जब शरीर में ऐसे गन्दे पदार्थ प्रवेश कर जाते हैं तब दो हालातें होती हैं।

(अ) शरीर या शारीरिक व्यवस्था उनके दूर करने के लिए प्रयत्न करते हैं।

(ब) उनको अपने में शामिल करने या सोख लेने की कोशिश करते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि शरीर के किसी भाग में जब कोई अन्य विजातीय वस्तु पहुंच जाती है तो उसे दर्द होता है और वह उसे निकालना चाहता है। यदि वह नहीं निकालता तो उसमें पड़ा रहता है और गांठ पड़ जाती है तथा फिर तरी या वर्षा ऋतु में अनुकूल सामान पाकर वह उभर खड़ी होती है। यदि आंख में किरकरी पड़ गई तो उसको सोख लेने वाली रूतूवत आंख से निकलनी शुरु हुई। या तो वह किरकरी बहकर दूर हो जायेगी या आंख की पैबन्द बन जाएगी।

अनावश्यक सामान ही गन्दा पदार्थ बनता है और गन्दगी उत्पन्न करता रहता है। ऐसे आदमी शान्त नहीं रह सकते। इनके शरीर के कल पुर्जे बिगड़ जायेंगे। वह समझ बूझ से खाली रहेंगे। परमार्थ का समझना तो कठिन होगा, वह व्यवहार के योग्य भी न रहेंगे। रोग इन दोषों के निकालने का प्राकतिक इलाज है। यदि मनुष्य अपने आप सोच समझकर पवित्र नहीं बनता तो, बिमारी पैदा होने का कारण है। यह काम जिस तरह प्रकति के समस्त व्यवहार में दिखाई पड़ता है उसकी वही क्रिया हमारे शरीर में होती है इसी को बिमारी कहते हैं।

क्रमशः

अनमोल वचन

- संसार का कोई जड़-पदार्थ रुह (आत्मा) को नहीं रोक सकता। मनुष्य को चाहे मौत के समय एक शीश के डिब्बे में बन्द कर दो, परन्तु आत्मा को रोका नहीं जा सकता। — कबीर साहिब
- मनुष्य जन्म एक अत्यन्त दुर्लभ दात है और इस बहुमूल्य अवसर को व्यर्थ खो नहीं देना चाहिए। — संत तुलसी साहब
- गुरुमुख व्यक्ति सेवा में आलस्य नहीं करता और कभी खाली बैठना नहीं चाहता। परन्तु मनमुख तन का आराम चाहता है और सेवा में सुस्ती करता है। — महर्षि शिवव्रतलाल जी
- सेवा कई प्रकार की होती है, कोई तन की सेवा करता है, कोई धन की अर्थात लंगर में पैसा देता है, लेकिन असली सेवा है-अन्तर में गुरु को प्रकट करना। — परमसन्त ताराचन्द जी महाराज

ज्ञान-सार

- घोड़ा अपने साज से नहीं गुणों से जाना जाता है, उसी तरह आदमी की कद्र दौलत से नहीं, सद्‌गुणशीलता से होती है।
- चिंता शहद की मक्खी के समान है। इसे जितना हटाओ उतना ही और चिमटती है।
- दूसरों के अनिष्ट की कामना रखने वाले को परमात्मा भी क्षमा नहीं करता
- जब तक तुम्हें सत्संग में अरुचि और कुसंग में प्रीति है, तब तक तुम्हारे आचरण अशुद्ध ही रहेंगे।
- जो मनुष्य दूसरे का बुरा करके अपना भला करना चाहता है, वह बहुत बड़ी भूल में है।

हृदय रोगों में अर्जुन की छाल

अर्जुन की ताजा छाल का प्रयोग- लगभग 10 ग्राम अर्जुन की छाल को लेकर 250 ग्राम पानी में उबालें तथा साथ में एक छोटी (हरी) इलायची डाल दे। जब लगभग 100 ग्राम रह जाये, उसमें दूध डाल दें। यदि चीनी का उपयोग न करें तो अधिक अच्छा है, उसके बदले में मिश्री डाल दें। परन्तु मिश्री को उबलते मिश्रण में न डालकर उसको नीचे उतारकर मिलावें। दूध अपनी इच्छानुसार डालें।

लाभ : इसके पीने से ब्लड़ प्रेशर बिल्कुल ठीक हो जाता है परन्तु जिसे कम रक्तचाप रहता है उसको यह प्रयोग नहीं करना चाहिए। आप दिन में 2-3 या चार बार तक पी सकते हैं और यदि चाय पीने की ज्यादा आदत है तो उसे कम करके इसका भी उपयोग करना चाहिए।

छाल का काढ़ा या चाय बनाकर पीने से रक्तचाप कम हो जाता है। इसके पीने से रक्त का बहाव सुचारू रूप से नसों में होता है और रक्त पतला होकर हदय को भली प्रकार से पहुंचता है। इसके पीने से रक्त में कोलेस्ट्रोल नहीं बनता है जिससे रक्त को धमनियों में हदय तक पहुंचने में कोई परेशानी नहीं आती है तथा इसका सेवन हदय को शक्ति प्रदान करता है।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"